मेघमाला

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

लक्ष्मीवेंकटेश्वराय नमः

भडली मेघराजनिर्मित

मेघमाला

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : जून २०१६, सवंत् २०७३

मूल्य : ४० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

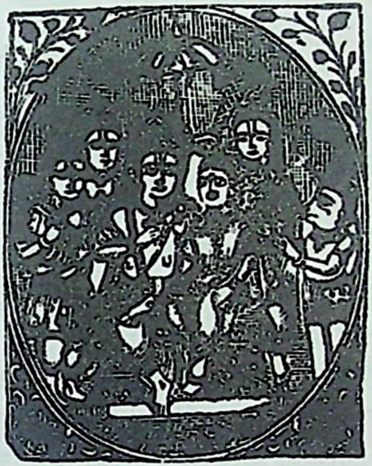
Web Site : http://www.Khe-shri com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

श्रीराममाहात्म्यम्

श्रीराम राम रामेति ये जपन्ति च सर्वदा ।।
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भवत्येव न संशयः ।।१।।

चैत्रमासे सिते पक्षे नवम्यां च पुनर्वसौ ।।
मध्याह्ने कर्कटे लग्ने जातो रामः स्वयं हरिः ।।२।।



जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः ।।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः ।।३।।

दासोऽहं कोसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।।
हनूमान् शत्रुसैन्यानां निहन्ता मारुतात्मजः ।।४।।

न रावणसहस्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत् ।।
शिलाभिस्तु प्रहरतः पादपैश्च सहस्रशः ।।५।।

अर्दयित्वा पुरीं लंकामभिवाद्य च मैथिलीम् ।।
समृद्धार्थो गमिष्यामि मिषतां सर्वरक्षसाम् ।।६।।

निवेदन

दोहा—मघमाल पहले छपी, रही एकहू नाहिं।
पर ग्राहकगण तासुको, प्रतिदिन मांगत जाहिं ।।१।।

यातें रुचि लखि सबनकी, छापन कियो विचार।
तबही शुद्धाशुद्धको, कीन्हो बहु निर्द्धार ।।२।।

छन्दभंग कहूँ अर्थ नहिं, अतिशयोक्ति कहुं जान।
रह्यो विराज विरोध बहु, ताको कीन्हो छान ।।३।।

अन्य प्रति कोउ नहिं मिली, यही रह्यो अवरोध।
याते जहं तहं ठीक कर, दीन्ह यथामति शोध ।।४।।

ताहूपै काहू जगह, भूल रह गई होय।
दयादृष्टि कर सुजन जन, क्षमा कीजिये सोय ।।५।।

श्रीगणेशाय नमः

अथ मेघमाला

दोहा–परम पुरुष घट घट रम्यो, ज्योतिरूप भगवान ।।सकल ऋद्धि सुख दैन प्रभु, नमति मेघ धरि ध्यान ।।१।। वाहन जाको हंस सित, और सिंह शिव तीय ।। शिवा भवानी शारदा, सकल एक नहिं वीय ।।२।। चरण नमो युग तासके, आगमवानी दाह ।। तिस प्रसाद इस ग्रंथको, रचौं सकल सुखथाइ ।।३।। चौपाई–गुरुसमान जगमहं नहिं कोई । मूरख पंडित करता सोई ।। ज्यों दीपक मंदिरतम नासत। गुरु ज्ञान अज्ञान विनासत ।।४।। षट्पदछंद–सकल वस्तुको भेद ज्ञान अज्ञान बतावत। नरक स्वर्गकी बात और शिवपद दिखलावत ।। ब्रह्मा विष्णु महेश ताहि गति कोइ न जानत । सो प्रसाद लहि है जु गुरूके वचन पिछानत ।। तीन लोक ब्रह्म रच्यो मृत्यु स्वर्ग पाताल सवि । सो गुरुकी किरपा दिसै वंदत मेघत्रय काल कवि ।।५।। दोहा–ज्योतिष-ग्रंथ अपार मग, जानत इक जगदीश ।। मानव सुर जानत नहीं, ताते मो मति कीश ।।६।। सोरठा–ज्योतिष घनो अपार, मूक आदि परखन जगत ।। विषमहि सम आचार, कालहु कालहि विधि सगन ।।७।। दोहा–ज्योतिषग्रंथ समुद्र है, ताकी ले इक बिंदु ।। मेघमाल मेघै रची, प्रगटै जिमि जग चन्दु ।।८।। सोरठा–मेघ कहत ए बात, उच्च ऋषीश्वर वचन गहि ।। होवो जगै विख्यात, सब कविजनकी कृपासूं ।।९।। दोहा–ज्योतिषग्रंथ न जान हौं, नहिं जानत व्याकर्ण ।। पिंगल पढ्यो मैं अमरमति, नहिं छंदोकी धर्न ।।१०।। हीन कही जिहि मात कुछ, भाषी अधिकी जोइ ।। करी कृपा कवि मोपरै, लेहु सुधारी सोइ ।।११।। सुर अहिवानी अतिगहन, मूरख समझत नांह ।। तिनके समझन हेत धर, सुगम रची मैं याह ।।१२।। चौपाई–मेघविचार प्रथम ए थाई। जैसे डक्वे कही बनाई ।। काल कालतनी यहि बाता । गुरुकिरपाते कहों

विख्याता ।।१३।। दोहा–कातिक अदिहिं देखिये, आश्विन मासज अंत ।। नींव धरो इह समयकी, जानो सब वृत्तंत ।।१४।।

अथ कातिकमासफल

दोहा–कातिकसुदि द्वितिया दिने, चढ़त चन्द जो लाल ।। पश्चिमदिशि बादर गरज, तो मेटत जगकाल ।।१५।। गरभ रह्यो तिन समे को, विघन न होवै कोइ ।। तौ बरसे जलधर दुनो, कोई दुखिया होइ ।।१६।। कातिकमावस आदि कर, अन्त जान वैशाख।। जे रोहणा इतमें खिवै, विगस्यो गरभ सुशाख ।।१७।। चौपाई–पाहणरज गोला वरषाई। भूमिकंप तारा गिर पाई ।। रवि शशि गहने कतक चडे। तौ अरिष्ट जानो सव पडे ।।१८।। दोहा–ए अरिष्ट जिस ऋतु महँ, होवै करो विचार ।। तिस नक्षत्रमें जानियो, पडै नहीं जलधार ।।१९।। चौपाई–कातिकवदिकी तेरस जान। मंगसिरबदी एकादसि ठान ।। पौषबदी नौमी तिथि कही। माघवदी सो सातम सही ।।२०।। फागनबदिकी पंचमि होई। चैतवदी तृतिया तिथि जोई ।। इन दिनमें बिजली युत मेह। पूरन गरभ सुजानो तेह ।।२१।। घनी साख निपजे चहुँ ओर। होइ सुकाल न लखियो होर ।। जो इन तिथिमें बीजु न मेह। तौ जानौ तुम काल संदेह ।।२२।। दोहा–कातिकसुद बारह दिनै, बादर छाया होय ।। तौ अषाढ़में बरससी, रूपजे अनुसम कोय ।।२३।। कातिकबदिकी द्वादशी, पौषवदीकी पंच ।। मंगशिरवदिकी दसम जो, माघवदी सत पंच ।।२४।। इन दिन बिजली बादरा, होवै करो विचार ।। सावन भादव आश्विनै, वरषत बहु जलधार ।।२५।। परिहाछंद–कातिकसुदी जु पंचमि रवि जे वारिया। दस विश्वे समा होई देख विचारिया ।। दस पंसेरी अन्न बिकै तो जानिये। पूंछी भड्डुलि बात उक्त इम मानिये।२६। शशिजु वार हुइ वार तौ विश्वे वीस है। बीस पंसेरी अन्न विके तो दीस है। मंगल वारी होई जो विश्वे आठ हैं। आठ पंसेरी अन्न बिकै

नहिं घाट है ।। २७।। विश्वे वारह जान बुद्ध जे वार है । तितनि पंसेरी अन्न विकत जु विचार है । । वृहस्पति हुइ जु वार विश्वे अठदसा । तितनोही है अन्न पंसेरी सब दिसा ।।२८।। भृगु विश्वे है सात पंसेरी सात है । जो होवै शनिवार तो काल विख्यात है । बरतै हाहाकार चौपदा वहु मरै । सूकै खेती पंचमी शनि जे अनुसरै ।।२९।।

अथ अन्यग्रंथात्

दोहा–रवि मंगल दुइ चार मण, सोम पंच बुध तीन ।। जीव शुक्र दिन होइ मण, शनि दुरभिक्ष संकीन ।।३०।। तोल कह्यो यह तीसको सेरी मण एक जान । पिछला चाली सेरको, मण पंजाब पिछान।।३१।।

अथ दिवालीफल

दोहा–रवि शनि मंगल वार हुइ, स्वाति रु आयुषयोग ।। दीप-माल तौ इमि करै, बधै बहुत नर रोग ।।३२।। छत्रभंग परवत गिरै चौपद महँगो होइ ।। गर्भ परत तिय कटकको, युद्ध उपद्रव जोइ ।।३३।।

अथ मंगसिरमासफल

दोहा–मंगसिरबदी जु पंचमी, घटा होत चहुँ ओर ।। वरसत वरसा लातणे, चार मास जल जोर ।।३४।। मंगसिरमहं बिजुली खिवै, श्रावण जलै रलेइ ।। गयो काल बहु कालको, गर्भ सूपूरण तेइ ।।३५।। चौपाई–मंगसिरमावस कूर जु वार । अल्प मेह अरु देशविडार ।। महंगा होवे जगत अनाज । किरसाणा का विगरैं काज ।।३६।।

अथ पौषमासफल

चौपाई–पौषहिमें विजुली गर जाई । बादर अथवा पूरव वाई ।। गरभ सुलच्छन आछा जान ।। वरषत सावनमहँ घन आन ।।३७।। पौषसुदी सातमि जु आठमी । अथवा देखो तिथि वा नवमी ।। गाज बीजु वादर इन होई । निपजै अन्न घनो सुख जोई ।।३८।। परिहाछंद–पौषसुदी छठ ग्यारस पून्यू जानिये । घरी सपूरण होहिं तो ए पिछानिये ।।

मावसघरी सुथोरी जानो पंडिता । मास अषाढ़हि वरषै जलद अखंडिता ।।३९।। दोहा–पौषवदी जे सातमी, जलधर नहिं ब्रसेइ ।। तौ आर्द्रमिं बरससी, जल थल इक्क करेइ ।।४०।। पौषबदीकी सातमैं, बिनु जल बादर छाइ ।। सावनसुदिकी सातमै, वरसत मेह उछाइ ।।४१।। पौष-वदी दशमी दिनै, बादर बिजुली जोइ ।। भादों वदि तौ द्वादशी, वरषा वहुती होइ ।।४२।। अडिल्ल–पोहवदी वा तेरस चोदस । बिनु जल बादर होहिं चहूं दिस ।। तौ सावनसुदि पूरनमासी । वरसत मेघ जु मनुलासी ।।४३।। दोहा–पौषवदीकी एकमै, जे होवै बुधवार ।। नफा अन्नते चौगुना, बरसत नहिं जलधार ।।४४।। अडिल्ल–रवि शनि मंगल तीनों वारै । पुष्य पुनर्वसु पुरवाषारै ।। जे पौषी मावस्या थाई । सेंरी तोल्या अन्न विकाई ।।४५।। सोम गुरू बुध शुक्र जिवारे पोह अमावस करो विचारे ।। अन्न घनो हुइ लेइ न कोई । जो लेवै तिहि घाटा होइ ।।४६।।

अथ माघमासफल

दोहा–माघै मासहि हिमपरै, वरषै विजुली गाज ।। समो नीपजै अति धनो, परजा सुख नृपराज ।।४७।। माघसुदीकी सातमै, कनियां बादर होइ ।। समो चलो तौ जानियै, जिहिं तिहिं जलधरि जोइ ।।४८।। माघसुदीकी एकमै, बादर अथवा वाइ ।। तेल घीहु ससतो हुवै, अन्न घनो निपजाइ ।।४९।। माघसुदी तिथि या दिनै, बादर आ गाज सुनेइ ।। जब गेहूं संचा करो, महंगा होसी तेइ ।।५०।। माघसुदी दिन चौथकै, बादर गजितो जोइ ।। पान धने नालेर बहु, ससते होवहिं दोइ ।।५१।। माघसुदी जू पंचमी, उत्तर चलै जु वाइ ।। तौ निहचै कर जल विना, भादव कोरो जाइ ।।५२।। चौपाई–माघसुदी छट गाजै नहीं । घी कपास सुमहँगी कही ।। माघसुदी सातमि जू निरमल । समो न उपजै कालजु सब थल ।।५३।। माघसुदी लखु सातमि चढ़त । सूरज

बादर माहीं अड़त ।। तौ सावनमहँ बरसत रहै । तीनपक्ष अरु दस दिन लहै ।।५४।। दोहा–माघसुदीकी सातमहि, बीजु बादरा देख ।। तौ अस्सू घन बरससी, बत्ती दिनलौं पेख ।।५५।। माघसुदी जो सातमी, होवै सोम जु वार ।। काल परै वहु युद्ध हुइ, बरसै जग तरवार ।।५६।। चौपाई–माघसुदीकी आठमि रात । चांद चरत बादर नहिं मात ।। छत्रभंग होवै फल सही । अथवा काल परै इमि कही; ।।५७।। दोहा–माघसुदीकी आठमें, बादरमहँ हुइ चंद ।। समो होत चहुँ खंडमहिं, बहुतो बरसत इन्द ।।५८।। परिहाछन्द–माघसुदीकी नौमी निशा निहारिये । शशि को हुइ परिवार तो ए विचारियै ।। आषाढै तौ मेह न मूलै बरसता । अन्न महँगी होइ सहू नर तरसता ।। ५९।। दोहा–आदितिवारैं पुष्य ऋषि, नौमी जे तिथि होइ ।। अन्नो लोहा चौगुना, भूख मरत सब कोइ ।।६०।।

अथ माघपूर्णिमाफल

चौपाई–माघी पूनम निर्मल होइ । अन्न अषाढै ससतो जोइ । लियो एकठा बेचु अनाज । ना बैचै तौ विगरै काज ।।६१।। दोहा–माघी पूनम बादला, जिहिं जिहिं याम करेइ ।। बरसा लै तिस मासमहिं, जलधर नहिं बरसेइ ।।६२।। अडिल्ल–माघहि पूनम सगली निर्मल । चार मास जले होवे गलगल ।। जिहिं जिहिं यामै काढै बादला तिहिं तिहिं मासे जल नहिं आगल ।।६३।।

अथ माघवदि नौमीका फल

चौपाई–माघै मासै नौमी देख । पुष्प अंधारै ऐं हीं लेख ।। बीज मेघ पाला हिम करै । सावन भादव वरषा परै ।।६४।। दोहा–माघवदी नौमी दिनै, मूल नक्षत्र जो होइ ।। तौ भादव सुदि नौमियै, जलधर बहुतो होइ ।।६५।। अडिल्ल–माही सातमि फागुन पांचम । चैत दूज वैशाखे एकम ।। इन दिन में बादल जल जोइ । नफा सवाया

अन्नते होइ ।।६६।। माघवदी मावस शशिवार । बादल अथवा हुइ जलधार ।। तौ भादवकी पूनम जान । जलधर बरसत निहचै आन ।६७।। माघ अमावस रवि शनि मंगल । घनी बात अरु देश उदंगल ।। सोमवार जे होइ मवस्या । लहै सुख परजा उपजत सस्या ।।६८।।

अथ फागुनमासफल

दोहा—फागुनमासै खर पवन, बायें मार करंत ।। तौ जानो निहचै करीं, घनो समो नहिं अन्त ।।६९।। चौपाई—फागुनवदिकी एकम भाल। कृतिकाकी घटिका निहाल ।। जेति घरीसे कृतिका जोइ। तितने विश्वे समा सो होइ ।।७०।। फागुन मावस वार जु क्रूर । लरै बहुत जगमाहैं सूर ।। देश उपद्रव अरु दुर्भिक्ष। कहत मेघ साची सुनि शिक्ष।७१। दोहा—फागुनसुदिकी पंचमी, पाला जलधर बीज ।। वैशाखे सुदि एकमें, बरसै गोजलजीज ।।७२।।

अथ होलीविचार

दोहा—फागुनसुदिकी पूनमै, होली हो इतिहार ।। होली जाली अग्निशिख, पवनै करो विचार ।।७३।। अडिल्ल—उत्तरवायु चलै तौ सुंदर । निपजत अन्न जु शैल वसुधर ।। पूरव पवन पुहमि सब डोलै । ऐसे उच्च ऋषीश्वर बोलै ।। ७४।। पश्चिम पवन समा नहिं होइ । दक्षिण अन्न लहि काल करोइ । जे चारों दिसकी हुइ वाइ ।नासै परजा भूप राइ ।।७५।। दोहा—पवन न होवै चहुँ दिसै, रहै सुनृप स्वठौर ।। चलाचली हुइ रंक जन, कोइ न करहै गौर ।।७६।।

अथ चैत्रमासफल

दोहा—चैत्रमास ना बीजली, बादल मेह न गाज ।। पवन अंधेरी ना चलै, समो मनौं हुइ राज ।।७७।। चैत्रमास नलसक हुइ, लगत विशाखै मेह ।। जेठमास तपतो रहै, जलधर बहु बरसेह ।।७८।।

अथ चैत्रवदिपडिवाको फल

चौपाई–चैतवदी परिवा जो बार। ताको पंडित करो विचार ।। रविवारी तौ बहुती वाइ। मंगल विग्रह कठकलराइ ।।७९।। सोम शुक्र गुरु होवै वार। धान दूध होवै सुहकार ।। बुधवारी हुइ काल परंत। शनिवारी ए फल होवंत ।।८०।। कूप नदी सर पाणी सोष। मरैं लोक चउपद बहु भोष ।। हाहाकार करै सब कोइ। शनिवारीको फल ए जोइ ।।८१।। चैतसुदी जु मेषसंक्रांति। नौ दिन ए जु सलिल बरसंति ।। तौ शंका कोई ना करो। घनो समो हुइ मूल न उरो ।।८२।। चैत अभावस शनि रवि मंगल। छत्रभंग वा देश उदंगल ।। तिसका भाष्या एह विचारा। मेघ कहै फलमासहि धारा ।।८३।।

अथ वैशाखमासफल

चौपाई–वैशाखै बादर पचरंग। अथवा झमकै बीजलि अंग ।। तौ अनेक घन जग बरसाइ। सावनमहिं बहु अन निपजाइ ।।८४।। दोहा–वैशाखे वदि एकमैं, बादल वा इस वार ।। मेघ घनो बरसात में, होहि सुखी नर नारि ।।८५।। वैशाखै सुदि एकमै, घटाटोप हुइ मेह ।। धान करो, इकट्ठे घने, सम। न होसी तेह ।।८६।। परिहा–वैशाखै सुदि दूज चढै जब चंदही। उत्तर दिशि हुइ ऊंचा दक्षिण मंदही ।। ताको इहै विचार जु जलधर बहु हुवै। इंद्रराइ इस भूमिसु आवै स्वधावै ।। ।।८७।। वैशाखै शुदि ग्यारस द्वादशि तेरसै। बादर छांटा होइकै बिजली मज लसै ।। राज उपद्रव होइ तौऊ आवर सणा। छत्रभंग इह कालसऊ नर तरसणा ।।८८।। दोहा–जे वैशाखी पूनमै, धनको करै अरंभ ।। तौ भादवमहिं काल दुह, को इत राखै थंभ ।।८९।। रवि शनि मंगल वार जे, मावस हुइ वैशाख ।। छत्रभंग वा घन सबल, मुनि सब ऐसे भाष ।।९०।।

अथ ज्येष्ठमासफल

दोहा–जेठै मासै रवि तपै, उष्ण चलत जग वाइ ।। तौ जानो घन बहु परत, धरती सकै नमाइ ।।९१।। जेठ न होवै तपतही, माघ न होवै सीत ।। तौ वरषा थोरी हुवै, थोरो अन्न सुमीत ।।९२।।

अथ जेठवदि पडिवाको फल

दोहा–जेठवदी पडिवा दिनै, जे होवै रविवार ।। वायु घनी तौ चाल है, मंगल रोग जु कार ।।९३।। गुरुशशि शुक्करवार होइ, घनो मेघ अरु धान ।। बुधवारी दुर्भिक्ष परत, कही उच्च ए वान ।।९४।। जो होवै शनिवारही, छत्रहि भंग करेइ ।। मेघ न वरसत भूमिपै, परजाइनी मरेइ ।।९५।। जेठपक्ष पहिले विषैं, गाज बीजल सकार ।। थोरा होवै चौपदा, घने मरै पदचार ।।९६।। रोहिनि सारी ही गली गलियो औरजु मूल ।। जेठवदी परिवा तपी जनमै चारे चूल ।।९७।। जेठहि मावस वार शनि, जे होवै विधि जोग ;।। परत न एको बिंदु जल, छत्रभंग पशुरोग ।।९८।। रवि शनि मंगलवारि या, मावस जेठहि जान ।। चोर अग्नि भय कालदुख, निपजत नहिं जग धान ।।९९।। चौपाई–जेठहि मावस संध्यासमै । सूरज देखो जिहिं आथेमै ।। जेठशुदी दुतिया लखु चंद । रविते पाछम चले तौ मंद ।।१००।। रविअथमनिते उत्तर चढै । समो भलो हुइ पंडित पढै ।। जे सूरजते दच्छन होई । काल रु घनो उपद्रव जोई ।।१।। दोहा–जेठी पूनम मूल नहीं, अथवा नहिं घनविंद ।। तौ सावन सूको गमै, समो बुरो अतिमंद ।।२।। जेठे मूलनक्षत्र महिं, गाज बीजु जलधार ।। सावन भादव सूकसै, समो न होसी वार ।।३।। जेठसुदीकी दूजमहिं, अथवा सारो पाख ।। गाजवीजु घम बादला, गरभ गल्यो तौ दाख ।।४।। सोरठा–जेठ रहै दिन दोइ, तामहिं जे जलधर परति ।। नीरनि मानै होइ, इंद्र न मूचै आप जल ।।५।।

अथ आषाढ़मासफल

दोहा–आषाढै वदि एकमि, गाजबीज पुनि वाइ ।।सावन भादव सूकस, खेती, मति न कराइ ।।६।। आषाढै बादलि करै, चल है उत्तर वाइ ।। तौ जानो कातिक थकी, सावन महिं वरसाइ ।।७।। आषाढै वदि दशमी तिथि, रोहिणी होइ नक्षत्र ।। नदी किनारैं झोपरो, परिहरि बहु वरषत्त ।।८।। जे आवे ते ग्यारसें, मध्यम समो वखान ।। द्वादशतिथि रोहनि हुवै, रौरवकाल दुहान ।।९।। लोक खपै चौपद मरै, रसकस महिंगो जोइ ।। डक्क ऋषीश्वर इम भणै, विरलो जीवे कोइ ।।१०।। जे आवै दिन चौदसै, समो करवरो जान ।। छत्रभंग हुइ राजको, निहचै कर मन आन ।।११।। तेरस दिन जो रोहिणी, एक घरी जो होइ ।। घनी अंधेरी चाल है, वर्षा भी नहिं जोइ ।।१२।।

अथ आषाढ़में काली रोहिणीका विचार

(जिस दिन रोहिणी नक्षत्र होवे उसी दिन लग्नमें सूर्य रोहिणी बीच आवे उसका फल) ।।

दोहा–रोहिणीके दिन रोहिणी, एक घरी जे होइ । काल परत अति आकरो, विरलो जीवत कोइ ।।१३।। चौपाई–आषाढै वदि अष्टम-निसा । चांद चढै बादलमहिं धसा ।। चार मास वरसा लातने ।। तौ बरसे घन जानो घने ।।१४।। आषाढै मावसदिन जोइ । आर्द्रा पुनर्वसू ऋष होइ ।। कालसु कालहि समता भाउ । ना लेवो ना बेचो राउ ।।१५।। दोहा –आषाढै सुदि पंचमी, खिवै बीजली जोर ।। समो घनो अति नीपजै, घन बरसै चहुँ ओर ।।१६।। चौपाई–जो आषाढसुदि छटकौ भाल । लसकै बीजुल बादर नाल ।। सगुन समैका जानो भला । होत सुपूरण षोडश कला ।।१७।। दोहा–गरजै घोरै मेघ हुइ, बादर शिखर करेइ ।। नीची ठौरो झोपरी ऊंची ठौर बंधेइ ।।१८।। सातमि सुदि हुइ निर्मली, आठमि बादर होइ ।। तो सावणमहि जानियो, वरषा

घनी सलोइ ।।१९।। परिहा–आषाढै सुदि नौमी निर्मलि देखिये। सांझ समय हुइ बादर ता फल लेखिये।। भादव होवै मेह घनो नहिं अंतही। सरकी फूटै पालु जु नीर चलंतही ।।१२०।। दोहा–आषाढै सुदि नौमियै, सारो दिन वा जोइ।। जो बादर गाजै किते, समो सबल अति होइ ।।२१।।

अथ आषाढ़पूर्णिमाफल

चौपाई–आषाढै सुदि पूनम जोइ। रविवारी रोगी दुख होइ।। बुधवारी बालक बहु मरै। दोष शीतला घर घर फिरै ।।२२।। मंगल-वारी कहिये मेह। शनि दुर्भिक्ष न जीवे केह।। गुरु शुक्र शशिवारी भाल। समो घनो दुख सगले टार ।।२३।। परिहा–आषाढै सुदि पूनम बादल गाज है। होत समा अतिघणा सकल जलराज है।। जे निर्मल हुइ रातु समान जानिये। काल परै सब ठौंरहि एम बखानिये ।।२४।। दोहा–आषाढी सित पूनमैं, पूवन उत्तर वाइ।। काक घनो नरसीसमहिं, देसी मस्तक पाइ।। २५।। घर घर भीखहि मगही कोइ न करसी दान।। भूख दोष नर पशु मरै, निश्चय करि मन आन ।।२६।।

अथ आषाढ़ सुदी पूनमको ध्वाजाकी पवनका विचार

चौपाई–मास आषाढी देखो पनरस। धुजा धरी जु जोवो पवनसे। जेतौ चालै पूरव वाइ। निपजत अन्न घनो सुख थाइ ।।२७।। चौपाई–अग्निकोनतै अनिल वगाइ। हो दुर्भिक्ष रु जल नसि जाइ।। दच्छनि दिसते चले समीर।। तिसी दिशा झूकै बलवीर ।।२८।। नैर्ऋत कोण बूंद नहिं परै। जीव सकल जग भूखां मरैं।। पच्छिम पवन समो हुइ मध्यम। जानै पंडित लखै न अधम ।।२९।। वाय वरुण चलै जे वात। सलभै मूसा बहु विषयात।। उत्तर अरु ईशानी वहै।। खीर खंड अमृत जग लहै ।।१३०।। निहचल धुजा रहै ठहराइ। भवखंड डोले बहु भय थाइ।। सांझसमै इमि करो विचार। काल दुकालै लखो अचार ।।३१।।

अथ सावनमासफल

दोहा—जेंठै मूलजु विनसयो, ताको डर नहिं कोइ ।। वरसै सावन पंचकै, समी घनो तौ होंइ ।।३२।। सावनवदि दिन चौथकै, निर्मल होइ अकास । तऊ अठारा याममहिं, जलधर करे विकास ।।३३।। चौपाई—सावनवदिको चौथ संभार । चढै जु रवि बादल मंझार ।। तौ पैंतालिस दिनलौं मेह । वरसै नित्य न आवै छेह ।।३४।। दोहा—सावनवदिकी पंचमी अर्द्ध निशालौं भाल ।। जे बादल गाजै नहीं, तौ परसी जग काल ।।३५।। सावनवदि जौ सप्तमी, अश्विनि रेलप्रकार ।। नित प्रति जग आनंद हुइ, घर घर मंगलाचार ।।३६।। चौपाई सावन वदिकी ग्यारस जोइ । रोहिनि नाम नक्षत्र होइ ।। तौ किसानहि धीरज देह । खेती करज्यो बहु हुइ मेह ।।३७।। जे होवै बारस शशि तीय । मध्यम समा बखान्यो वीय ।। तेरस दिन रोहनि नक्षत्र । काल परत जानो सरवत्र ।।३८।। सावनमावस मंगलवार ।। अल्प अन्नअरु पीडाकार ।। भूख दोष जग बहुता मरै । कहीं मेघ कहिं सोका परै ।।३९।।

अथ भादवमासफल

दोहा—भादवसुदिकी पांचमी, जे घन नहिं वरसंत ।। तौ निहच इम जानियो, जलधर हूवो अंत ।।१४०।। चौपाई-भादवमें भरणी ऋषि जोइ । बादर छांटा मोघां होइ । सर्व देश तो वर्षा जान । लोक सुखी जगमें बहु मान ।।४१।। भादवमावस जे शशिवार । ताको पंडित करो विचार ।। अन्न घनो जग होवै सुखी । घर घर मंगल कोइ न दुखी ।।४२।।

अथ असोजफल

दोहा—मास असोजै मावसें, जो होवै शनिवार ।। मध्यम समा बखानिये, तिसी मास फल धारि ।।१४३।। इति श्रीमुनिमेघराजविरचित मेघमाला द्वादशमासफल नाम प्रथमाधिकार समाप्त ।।१।।

अथ ग्रहनक्षत्रवर्षालक्षण

चौपाई–गुरु रवि मंगल पुरुष पिछान। राहू शशि मृग वनिता जान।। शनि बुध केतु नपुंसक कहे। भाषे मेघजु गुरु सुख लहे।।१।। परिहाछंद मूलहि पुरवाषाढ़ उत्तराषाढ़ही। श्रवण घनिष्ठा और शत-भिषा गाढ़ही।। पुरवाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपद। रेवति अश्विनी कही सुभरणी जान हृद।।२।। जानो कृतिका रोहनि मृगशिर एक हैं। चउदा पुरुष पिछान नक्षत्र इम लहै।। अनुराधा जु विशाख ज्येष्ठा जानिये। कहे नपुंसक तीनों ग्रंथ बखानिये।।३।। दोहा–देखु जु आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य सलेषा जान।। मघा पूरवा फालगुनि, उत्तराफालगुननि।।४।। गज चित्रा अरु स्वाति ऋषि, दस वनिता ए जोइ।। नर तिय जो एकहि मिलै, वरषा बहुती होइ।।५।। पुरुष पुरुष मिलतापना, तिय तियसों नहिं मेह।। मिलै नपुंसक पुंससौं, वरषाको अतिछेह।।६।।

अथ चारथंभसमेके विचार

अडिल्ल–चैतसुदी एकम दिनेरे। बयम वैशाखैं एकम थेवे।। जेठसुदी एकम मृगशिर। पुनवंसाषाढै सुदि धर।।७।। दोहा–चैतै जो वैशाखही, जेठहि अरु आषाढ़।। चारोंकी सुदि एकमें, चारन छत्तर माढ़।।८।। संवत्सर ए गेह है, तिसके चारों थंभ।। जे चाहै थरिको रयो, इन विन घरि दुरलंभ।।९।। चारों होवहि थंभ इहु, तौ वरसत चौमास।। जो थंभा होवै नहीं, नहिं वरसत तिस मास।।१०।।

अथ रोहिणीचक्र

दोहा–लग्नचक्र पहिलै करी, सागर चार बनाइ।। परवत आठ सु जानियो, चारे शृंग कहाइ।।११।। तट अठ जानो पंडितो, मेष-संक्रांतिज ऋक्ष।। सो दीजै घर आदिकै, अनुकरमहिं सब लिक्ष।।१२।। लिख नक्षत्र अठवी सही, शृंगै दो दो देइ।। और ठौर इक इक लिखे, रोहिणिको फल लेइ।।१३।। जिसमें परहै रोहिणी, ताको करो विचार

।। काल दुकालहिकी विरत, वरषा लखो अचार ।।१४।। सागर परै जुवष्टि बहु, उत्तम तट घन जान ।। पर्वत बिंदु न घन परत, शृंगै खंडित मान ।।१५।।

अथ ग्रहराशिफल

दोहा—बुध गुरु इक जे राशिमहिं, आवति तऊ विचार ।। वरषा होवै बहु घनी, अन्न घनो संसार ।।१६।। गुरू शुक्र इक राशिमहिं, तीजो शशि जो आइ ।। घन बरसै सब जगतमहिं, मेघै दियो सुनाइ ।।१७।। गुरु शुक्र दोऊ मिलै, दस भादौं कर देइ ।। कै राजा जूझै घने, के घन बहु वरसेइ ।।१८।। राशि एकमें पंच ग्रह, क्रूर सौम्य जू आइ ।। छत्रभंग राजा मरै, अथवा घन बहु थाइ ।।१९।। चौपाई—मंगल शशि गुरु इकठो होई। एक राशिमहिं देखो जोइ ।। सकलमहँ वरषा परै। अन्न घनो सबके घर भरै ।। २०।। शनि शुक्र मंगल इक राश। करत राजको निहचै नाश ।। परजा नाश करै जल हान। कह्यो पंडितै सांची जान ।।२१।।

अथ मूसलयोग

दोहा—आदि शनिश्चर मध्य गुरु, मंगल होवै अन्त ।। तिन राशै तिन ग्रहि क्रमहिं, घने मरत जग जंत ।।२२।। मूसलयोग जो नाम इस, करत जगत दुहकाल। जीवत विरलो कोइ नर, तीनों लोक विचाल।२३।।

अथ अंगारोयोग

चौपाई—तीन उत्तरा मृगसिर जान। पुष्यं पुनर्वसू छट्ठो ठान ।। मंगल गुरु इनमें जो आइ। योग अंगारों एह कहाइ ।।२४।। जौलौं मंगल इन्हमें होइ। तौलौं मेह परत नहिं लोइ ।। झूठे वादर होहिं अकास। डक्क ऋषीश्वर ऐसे भास ।।२५।। सूरज आगै मंगल होइ। तौलौं मेह परै नहिं कोइ ।। जो सूरजके पाछे आइ। तौ वरसै गो घन जग राइ ।।२६।। दोहा—मीन शनिश्चर कर्क गुरु, मंगल तुलमें आइ ।।

घीउ अन्न अरु साल पय, विरलो कोऊ खाय ।।२७।। आदि शनिश्चर मध्य रवि, अंत भूमिजा होइ ।। इह विधि भारत रच्चियो, विरलो जीवै कोइ ।।२८।।

अथ मृत्युयोग

अडिघा–मूल मल्ला पुष्य रोहिणि रेवै । पुनर्वसू शनि आई सेवै ।। परं दुकालहि मरै नरेश । और उजारै सगले देश ।।२९।। जगत उपद्रव दुख वहु थाइ । खंडन वेसहु भीख मंगाइ ।। चलाचली सव जगमहं जान । चौपद पंछीकेरी हान ।।३०।। दोहा–मूलै रेवति अश्विनी; मघै शनिश्चर जाइ ।। शंकर पूंछत गिरिसुता, दीये क्या वरताइ ।।३१।। चौपाई–डोलै धरनि फटै ब्रह्मंड । हाहाकार करै नव खंड ।। दीपतने राजा डुलजांहि । कहै गिरिसुता शंकर पांहि ।।३२।। मूल विशाखा करि अरु रेवे । जे शनि आई इतको सेवे ।। नाश करै पृथवीसहु जान । मांस भखै नर आपनो मान ।।३३।। मानसको मानसही खाय़ । अन्न न किसहीकै घर थाय ।। छोड़ भूमि नर अपनी जाइ । जहँ जावै तहँ भूख मराइ।।३४।।

अथ ग्रहोदयफल

दोहा–अगस्त्युदयते पहिलजू, जे होवै घन धारि ।। उदय होइ नहिं बरसही, तहितौ जलधर भारि।।३५।। तारेकेरे उग्गमनि, मंगलकेरी चाल ।। पंडित एम विचारियौ, बरसै काल दुकाल ।।३६।। शशिपुत्र भृगु साववै, होवै उदय विकास ।। जगमहं जलधर वरससी, करै दुकाल विनास ।।३७।। सावनमें बुध ऊगियो, भरियो सरसो सेइ ।। जे बुध ऊगै भादवै, दस भादक कर देइ ।।३८।। जे बुध ऊगै अश्विनै, थलमहँ कमल करेइ ।। समो होत चहुँ ओर महं, जग सहु सुखा वसेइ।।३९।।

अथ शुक्रोदयफल

परिहाछंद–फागुन चैत्र उदय संपदा सुख करै। वैशाखै नृप पीर जेठ वरषा परै ।। आषाढे नहिं मेह सावनहि पशु दुखी । भादव

धानहि वृद्धि अश्विनै सब सुखी ।।४०।। कातिक मंगसिर भला जगत-महँ सुख करै । पौष माघ हुइ भंग छत्र जग बहु मरै ।। करियो द्वादस मास शुक्र जो उदय फल । निहचै करकै मान वचन नहिं ए निफल ।।४१।। दोहा—उदय अस्त इक पाखमहँ, भृगुको सुत जो होइ ।। नृपके सुतन हजारको, पिवन रुधिरको जाइ ।।४२।।

अथ शुक्रचक्र

दोहा—चक्र कीजिये, षट् गृहा, आछी विधिसौं भाल ।। तामधि अंक जो ए धरो, अनुकरमैं सुन लाल ।।४३।। चतुर चतुर रु पंच तिन, पंच छेइ ए जान ।। भरणी आदि विचारिये, जिही शुक्र ऋषि ठान ।।४४।। चौपाई—पहिल चतुरमहि गो धन खीर । दूज चौकहि बहु घन नीर ।। पांचों दोमें खेती नास । षट् तिनिमांहै घनो विलास ।।४५।। दोहा—विन शुक्रते षट्ग्रही, एक रासमें आइ ।। गोलयोग ए आखिये, छत्रैभंग कराइ ।।४६।। चौपद परजा बहु मरै, पृथिवी डामाडोल ।। निहचै कर पंडित लखो, डक्क, ऋषीश्वर बोल ।।४७।।

अथ संक्रांतिविचार

दोहा—जो घटिका संक्रांतिकी, तामें सात मिलाइ ।। पहिला भाग जु सातको, पुनि तीनोंका दाइ ।।४८।। एक बचे सुरभिख घना, दोते समता जान ।। सूनै सून बखानियै, पंडित करिये ज्ञान ।।४९।। सोरठा—करहु ध्वांक्षी नाम, रविवारी संक्रांतिको ।। वाउघनी संग्राम, महंगा धान जु नरदुखी ।।५०।। दोहा—कहियो नाम महोदरी, सोमवार-संक्रांत ।। धान घने जग सब सुखी, रसकस घने हुवांत ।।५१।। परिहा-छंद—मंगलवारी नाम सघोरा आखिये । घृत गुड गेहूं तेल मसूरै दाखिये । लाल वसन तांबूल महँगा जानिये । चोरी दलकी चालहि युधभय मानिये ।।५२।। दोहा—नाम कह्यो मंदाकिनी, बुधवारी संक्रांत ।। रसकस महँगा नीच भय, बसन घने जग संत ।।५३।। मूंग हरी जो वस्तु है,

पन्नादिक सो जान ।। महँगी होवही ए जगत, भड्डुली करि बखान ।।५४।। परिहाछन्द–गुरु जु वार संक्रांत सुमंदा नाम है। व्यापारीको लाभ जगत सुख ठाम है ।। हेमादिकसहु पीत वस्तुमहँगी हुवै। सुखी लोक बहु पुष्ट कह्यो ऐसैं ध्रुवै ।।५५।। भृगुसुतवारी नाम मिश्रका भाषिये। तेल घीउ अनाज घना इहु दाखिये ।। घरि घरि मंगलचार चौपदाजी वधै। व्यापारी जन सुखी काम जग सब सुधै ।।५६।। कह्यो राक्षसीनाम शनिश्चरवारकी। घनो उपद्रव होइ धार तरवारकी ।। रुंड मुंड हुइ भूमहि महँगा धानही। तेल कपासहि लून महिंग सुख हो नहीं ।।५७।।

अथ पौषमाससंक्रांतिफल

परिहाछंद– पौषेकी संक्रांति हुवै रविवारिया। धानहि तिगुनो लाभ मास षट्कारिया ।। शनिवारी ते लाभ चौगुना धानते। छठे मास महँ जान कहो मैं मानते ।।५८।। भृगुबुधवारही जो हुवै ससतौ अन्न विकाइ ।। जे होवै गुरुवार दिन दमड़ो आधो थाइ ।।५९।।

अथ कर्कसंक्रांतिफल

चौपाई–कर्कसंक्राते दिन बरसाइ। सिंहसंक्रांतक जोरी थाइ ।। तौ जल बरसौ चारों मास। कोइ न करियो मन विसवास ।।६०।। दोहा–मुख भिज्ज सजो सिंधको, अथवा भीजै पीठ। तौ खेती निहचै करो, मेघ निरंतर दीठ ।।६१।। शनि रवि मंगल कर्कको, होवै जो संक्रांति ।। महँगा अन्न रु अल्प जल, देशै भंग करंति ।।६२।। जे बुधवारी होइगी मध्यम समा बखान ।। गुरु शुक्र शशिकै दिनै, तौ जग सुरभिख मान ।।६३।।

अथ चैत्रसंक्रांतिफल

दोहा–मीनतनी संक्रांति जो, बुधवारी जे होइ ।। भंगछत्र जल नहिं परत, घर घर रुदन करेइ ।।६४।।

अथ संक्रांतिमुहूर्त्तफल

चौपाई—सर्प ज्येष्ठा आर्द्रा भरणी । शद्भिष पंद्रा मूउरत धरणी ।। ए संक्रांति उपद्रव करै । क्रूरे वार नृपति युधि हरै ।।६५।। परिहाछंद—रेवति श्रवणहिं पुष्य मघा पुनि स्वातिही । चित्रा अश्विनि हस्त मृग सिरायातही ।। पुरवा तीनों मूल कृत्तिका जानिये । धनिष्ठा अनुराध स्वातीसैं मानियै ।।६६।। दोहा—सरव जगत समता रहै, जो इनकी संक्रांति अन्नभाव समही रहै, कहत सबै इमि शांति ।।६७।। चौपाई—उत्तरा तीन विशाखा रोहनि । औरु पुनर्वसु जानो सुहुनि ।। पैतालीस मूहूर्त होइ । अन्न घनो जग सुखि यो लोइ ।।६८।। दोहा—पंद्रा मूर्त्त राक्षसी, तीसहि सुरकी मान ।। पैतालीसे मानवी, त्रिविध कह्यो परमान ।।६९।।

अथ संक्रांति सूती बैठी ऊभी फल

वृद्धिचौपाई—मूला श्रवण विशाखा रोहनि अश्विनी मघा बताई। पुरवाभाद्रपदा करि पुनर्वसु अदित बैठी इन्हें कहाई ।। भरणी मृगसिर पुष्य पूर्वाफालगुनी अनुराधा । पूरवाषाढ़ धनिष्ठा चित्रा उभी खरी डंडी सुलाधा ।।७०।। ज्येष्ठा स्वाती कृत्तिका उफा उषा शद्भिष कहियै । रेवति आर्द्रा औरु श्लेषा सूती संक्रम लहियै ।। जो संक्रांति इन्होंकी होवै खरी परी लखु सूती । इनका गुण विचारों पंडित भली करी करतूती ।।७१।। दोहा—सीयालै सूती भली, बैठी वरषा काल ।। ऊन्हालै ऊभी भली, जगमें करै सुकाल ।।७२।।

अथ संक्रांतिवरषाफल

चौपाई—मँगसिर कातिककी संक्रांति। मध्यम समा जु घन वरसांति ।। पौष माघ होवै जलधार खेतीं घनी सुखी नर नार ।।७३।। चैत्र फाल्गुन जेठ विशाख । जे वरसैं घन संक्रम साख ।। परजा राजा सब जग खुसी । अन्न घना जग सारैं हुसी ।।७४।। दोहा—मियुन व्याधि करकै सुखी, भादव होवै रोग ।। कन्यामहँ जो वरससी, शुभ सरवत्तर लोग ।।७५।।

अथ मासक्षयफल

दोहा–संवत तेरा मास हुव, इक गत जावे मास ।। महा उपद्रव तिस बरस, धरणी सकल विनाश ।।७६।।

अथ तेरह दिनके पाखका फल

दोहा–युग सहस्र बीतै थकौ, विधिकै होवै योग ।। तेरह दिनको पाखहीं, नाम करत तिक लोग ।।७७।। चौपाई–काल परत जम सारै सही । रुंड मुण्ड हुई सगरीं मही ।। छत्रभंग अरु हाहाकार। क्षय होवै सबही नर नार ।।७८।। छप्पैछंद–कौरव पांडव लरे राम रावण युधि किद्धौ । हुवो जगत संहार कालनै बहु जन विद्धौ ।। ब्रह्मापुत्र जु भरत साथ बाहू बल लरियो । बारह बरसी काल जगति याहीते परियो ।। अनेक उपद्रव जग करति तेरा दिनको पाख इहु । धुमाधाम जो युद्ध हो ऐसौ फल मुनि मेघ कहु ।।७९।।

अथ पक्षक्षयफल

दोहा–द्वादश मासहि पक्ष इक, विधि योगै गत जाइ ।। छत्रभंग वा नृप मरै, डक्कै दियो बताइ ।।८०।। द्वादश मासैं मासइक,गत जावै तो एह ।। क्षय होवै संसार सब, राज मलेछ करेह ।।८१।। पापबुद्धि सब जग वसैं, होवै नीच प्रणाम ।। जिंहि तिंहि ठौरें देखियो, होत घनो संग्राम ।।८२।।

अथ तिथिक्षयफल

चौपाई–मंगसिर पौषे माघै फागुन । मास जु पांचों चैत्रसौं गिन।। शुक्ला तिथि इनकी गत जावै ।। छत्रभंग दुर्भिक्ष बतावै ।।८३।। दोहा–माघै भादव पौष तिथ, शुक्ल जु तिथि गत जाइ ।। तितने मासहि नृप मरै, जेती तिथि लखु भाइ ।।८४।।

अथ तिथ्यधिकफल

सोरठा –द्वादश जानो मास, शुकल तिथि जौ अधिक हो ।। होवहि घने विलास, अन्न घनो जलधर घना ।।८५।।

अथ अधिकमासफल

परिहाछंद–दौ चैत्रते समा मध्यमा जानिये ।। वैशजातको उदयस एम बखानिये ।। दो वैशाखे भला जगतमहँ सुख करै । खेती होवै घनी काल जगतै हरै ।।८६।। सोरठा–दो जेठे नृपहानि, दो अषाढ़ जन घन घनो ।। दो सावन फल जानि, काल परे धरनी डुलै ।।८७।। दो भादौं बहु धान, सर्व कामना जग फलत ।। दो आसू चौरान,उदय होत संग्राम बहु ।।८८।।

अथ एक मासमें पंचवारफल

दोहा–पंच शनिश्चर पंच रवि, पांचों मंगल होइ ।। करे उपद्रव भूमही, विरलो जीवै कोइ ।।८९।। रोग घनो रवि पांचते, मंगल भय बहु दाइ ।। शनि पांचे इक मास जो, रसकस महँगा थाइ ।। ९० ।। चौपाई–ज्ञ गुरु शुक्र दधिसुत संचारैं । मास पांच जु होवै वारैं ।। मंगल-कारी जगहि कल्यान । सर्व सुखी नर राज दिवान ।।९१।। पहिल मास शनि होवहि पंच । दूजै मासहि रवि पंचसंच ।। पांचौ मंगल तीजे मास। आगो पीछी एह विलास ।।९२।। दोहा–फिरत चक्र ज्यों देश सब, मचै घनो संग्राम ।। रुंड मुड सब जग दुखी, ताको फल भनि आम ।।९३।।

अथ रविशशिकुंडलपरिवारफल

सोरठा–रवि शशि हुइ परिवार, ताकौं फलहुजानियो ।। अन्न महँगो कार, मेघमाल मेघे कह्यो ।।९४।। चौपाई–पीत वर्णते होवै रोग । शुक्ल वर्णते वरषा जोग ।। श्याम वर्णते राजा मरै । नील वर्णते वरषा परै ।।९५।। धूम वरनते धूमाधाम । जगमें बरतै बहु संग्राम ।। घना उपद्रव जगमें होइ । हाहाकार करैं सब कोइ ।।९६।। आधेते आधा फल होइ । सारे ते सारो फल जोइ ।। रवि ते दूर दूर फल करै । निकट देश आपनै धरै ।।९७।। दोहा–रवि शशि मंडल कुंडला दुहरा तिहरा होइ ।। दुहरा तिहरा फल करै, निकट राज शुभ जोइ ।।९८।।

अडिल्ल—कृष्ण पौष चौदसजु पंचम । तीजी तिथि मावस लखु उत्तम ।। रवि शनि मंगल हुइ परवारै । तौ विग्रह नृप युद्ध संहारै ।।९९।। एकम नौमी दसमि इकादस । रवि शनि मंगल कुंडल हुइ तिस ।। पुव्व भिवडा गुंडान वराट । खंड बुंदेलहि नारावाट ।।१००।। आठमि मावस शनि रवि मंगल ।। जो होवै रवि शशिको कुंडल ।।पच्छिम दिशिसौ विग्रह करैं । युद्ध बीच बहुतै नृप मरैं ।।१।। चौथ पंचमी तेरस तीजै । रवि शनि मंगल वार लखीजै ।। जे इनमहि रवि शशि परिवार । दक्षन देशै करत विकार ।।२।। पूनम पंचम दशमी बारस । दुज भौम रवि शशि जेकारस ।। पौ विग्रह उत्तर दिशि जानै ।। नर चौपदकी होवै हानै ।।३।।

अथ दुकाललक्षण

चौपाई—माघमहीनै परैं न शीत । मूला जेठन तपियो मीत ।। आर्द्रामिहिं जौ वरसै नहीं । लक्षन एह कालही सही ।।४।।

अथ सुकाललक्षण

चौपाई—माघे शीत फाल्गुनै वाई । चैत निर्मलो सारो थाई ।। पंच वर्ण बादल वैशाख । अथवा कनी परत बहु साख ।।५।। ज्येष्ठ तपत मृगसिर समीर । आर्द्रामें वरषै घन नीर ।। इहु लक्षन सह काले तना । वरसै मेघ जगतमें घना ।।६।। आषाढी पूनम शशिवार । पूर्व वायु चले दिन सार ।। गहिरा दिन हुइ सारो जान । आर्द्रा लागै तिसकौं आन ।।७।। सूर्य मृगशिर माहै होई । कृतिकामें वरषा जु होई ।। लच्छन ए सुहकालै सही । मेघमालमँहि मेघै कही ।।८।।

अथ चन्द्रोदयफल

चौपाई—जे शशिकानी दोमें होइ । तौ समतामें वरतै लोइ ।। कछू उपद्रव किसहू देश ।। माहोमांही लरैं नरेश ।।९।। दक्षनकानी ऊंची थाइ । तौ दुर्भिक्ष घनोही थाइ ।। उत्तर दिशिते ऊंची भाल ।

तौ जगको शशि करै निहाल ।।११०।। दोहा—जे शशि ऊगे सोम शनि, एक अचंभो जोइ ।। छत्र परै दिन तीसमँहि, कै कन महिंगो होइ ।।११।। परिहा—शतभिष पूरवाषाढ श्लेषा रेवती । भरणी ज्येष्ठा जान चंद्र जे उगमती ।। छत्रभंग इक मास जगत दुख पावही । होवें राज विनाश अन्न महिंगा वही ।।१२।।

अथ चंद्र चढ़ेके रंगका फल

दोहा—लाल वर्णते रस महिंगा, शुक्ल वर्ण हुइ मेह ।। श्यामवर्ण तरंग जानिवौ, पीतै सुभिक्ष तेह ।।१३।।

अथ मंडलफल

दोहा—अग्नीमंडल पहलहीं, वायव दूजा जान ।। वारुनि तीजा मंडला, चतुर महेंद्रहि ठान ।।१४।। अडिल्ल—पुरवाफालगुनि मघा विशाखा ।। पुष्य कृत्तिका भरणी राखा ।। पुरवाभाद्रपदामें जोइ । एह उपद्रव इनमें होइ ।।१५।। रवि शशि गहन कुंडलो होइ । वर्गै अंधेरी माटी लोइ ।। भूमिकंप अरु विजुली परै । शब्दनि घाउ जगहि धुनि करै ।।१६।। कंकर लोहू वरषै धूर । तूटै तारा अथ मनि सूर ।। धूमकेतु चठयाला तार । चढै अकासै सुनो विचार ।।१७।। जे कोई इन बीचो एक । इन्ह नक्षत्रमँहि होवै टेक ।। मंडल अगने इसका नाम । ताका फल सुनियो अभिराम ।।१८।। तिस वरषै वरषा ना होइ । परिधरी भिषिया मांगै लोइ ।। देश जालका अरु कसमीर । पत्तरपथ जालंधर वीर ।।१९।। कौरव पैरव मालय जान । देशै सोरठ कह्यो बखान ।। इसका फल इन देशमझार । दुख पीरा उपद्रवकार ।।१२०।। मरै भूख सौवन्ह नर नारि । घोरा हसती होई संहार ।। अग्नीमंडल पहिला भाष्या । जो गुरु कह्यो सो मेघै आष्या ।।२१।।

अथ वायव्यमंडलफल

संकरछंद–स्वाति चित्रा समान हस्ति मृगशिर अश्विनी बखान। गुनी फाल जो उतर आदितै साज प्रमान ।। पाछे बखानै हैं उपद्रव ताहिते इक होइ। जो नक्षत्रमांहिही वायव्यमंडल जोइ ।।२२।। मैं फल बखानो तासुको तुम्ह सुनो नर धरी कान। घटत पूजा देव गुरु द्विज होइ धनकी हान ।। देहरा गृहै शृङ्गारको पवन ढाहै एह ।। तुटै कूरो खेपटै धरनी वृक्ष फल ना तेह ।।२३।। धरमते नर भ्रष्ट होवै करै नृपति अनीत। जग भूख दोषै मरत नर बहु प्रीति छांडहि मीत ।। पंचाल देशै सूरसेनै मगध द्राविड जान। उज्जैन बरबर पारसीकै सातमो परवान ।।२४।। देशहि मलेछै मारवाड़ै विंध्याचल नाम। कह्यो विद्याधारि करनाटै होइ इन संग्राम ।। पुनि देश द्वादशमहिं होवै याहिको फल जोइ। वायव्यमंडल विचारो कूट बात न होइ ।।२५।।

अथ वारुणीमंडलफल

सोरठा–मूल आर्द्रा जान, पुरवाषाढा सर्प ऋषि ।। उत्तराभाद्रपदानि, रेवति शतभिष सातहु प्रगट ।।२६।। दोहा–तिन्हों बीचते एकही, कोऊ परगट होइ ।। तो निहचै सब जगतमें, नहीं उपद्रव जोइ ।।२७।। तौ मंडल इन्ह धान वृक्ष फलसौं फलै। मूसा कीरी टिड्डी थलैते इह तलै ।। चीता हरनै कूता केहरि वन नसै ।। भैस गऊहू दूध जगत सब सुख वसै ।।२८।। घनी होत जग नार मेघ बहुते परै ।। इनि देशनिमें जानिये ।। सोरठ अरु कसमीर विनास्यो मानिये ।२९।। मरुजदेश अरु कौलक होइ उरही। जीवयोनि करे सहि होइ संसारही ।। कह्यो वारुनो नाम मंडला पुर सही। पंडित करो विचारू भड्डुली इम कही ।।१३०।।

अथ महेन्द्रमंडलफल

छंददुवइया–श्रवण धनिष्ठा रोहिणि ज्येष्ठा अनुराधा नक्षत्रं। उत्तराषाढा औरु अभीचं महेंद्र लखु अत्रं। । जो उंतपात कहे हैं पाछै

ताते इनि पक होई ।। इन नक्षत्रमहि देख विचारो ऐसो फल जग जोई ।।३१।। सरब सुकाल प्रजा सुखकारी सिद्धि जु राजाकेरी । रोग घटै नर नारी चौपद दुख इनि देशहि फेरी ।। मगध कुरुक्षेत्र दिल्लि पानीपत सामुद्रं । इनि देशन उपद्रव होवै फल भाष्यो माहेंद्रं ।।३२।।

अथ चारोंमंडलका फल

अडिल्ल—मंथल अत्रेय फल त्रिक मास । दसमें मासै वायव्य-रास ।। मास एकमें फल हुइ वारुनि ।। सातै रात महेंद्र कारनि ।।३३।। दोहा—दक्षनम आग्नेय परैं, वायव उत्तर जान ।। वारुनि पच्छममें हुवै, पूर्व महेंद्रहि ठान ।।३४।।

अथ संक्रांति तस्मै मंडलमध्ये शशिफल

दोहा—जिस घटिका संक्रांतिको, लगै अक्षमें भानु ।। तिसी समै शशि देखियो, करु फल तासु बखानु ।।३५।। सूरज लगै संक्रांति जो शशिमंडल अगनेइ ।। (तौ वरषा नहिं मास तिस) दुर्भिक्ष तसकर जग घना, भय होसी लखु भाइ ।।३६।। जे हुइ मंडल वारुणी, शशि संक्रांति हि काल ।। क्षेम अरुज घन जग घनो, सांची जानो लाल।।३७।। शशी महेंद्रमंडलै, तौ जगमहिं घन घोर ।। लोक सुखी मंगल घने, मानो बात न ओर ।।३८।। सब संक्रांतिहि देखियो, इसको फल सचभाल ।। मंडल चारे हैं कहे, पाछे वृक्ष विशाल ।।३९।।

अथ समैके राजाका फल

दोहा—जलधर धान जु अल्पही; जगत पीर मृत होइ ।। तरुवर निफलो जानियो, रविराजा फल होइ ।।१४०।। मंगल शोभा घन घना, नृपसुख उदय बखान ।। रोग घटै बहु धान हुइ, शशिराजा फलजान ।।४१।। विघ्न विग्रह व्याधि नृप, अग्निदोष जल छेह ।। सैन्याकुल जगमहि फिरत, मंगल नृप फल एह ।।४२।। मेघ घनो परजा सुखी, दया धर्म जग दान ।। सुरभिख मंगल घरि घरै, बुध राजा फल मान

।।४३।। घन जग सारेही परत, धेनु दूध बहु होइ ।। अग्निहोत्र विप्रे करत, गुरु राजा फल जोइ ।।४४।। खेती मेह घनो जगत, सफल होत तरुराइ ।। गऊ छनी कल्यान नित, शुक्र नृपति फल थाइ ।।४५।। रोग घनो पीरत जगत, युद्ध शोक भय चोर ।। भ्रमति लोक घन नहिं परत, इहु फल नृपतिजु शोर ।।४६।।

अथ मंत्रिफल

चौपाई—जलत भूम अरु दाहाकार । महिंगे धान करत संहार ।। रवि मंत्री हुइ इहु फल जान ।। अरघ दीपकैकी इहु बान ।।४७।। सकल जगतमहिं हुइ कल्यान । होति उदय नृपको बहु धान ।। शालि कनक ए ससते दोइ । शशि मंत्रीते फल इहु जोइ ।।४८।। महिंग अन्न अरु वरषा खण्ड । युद्ध चोर जगमहिं बहु दंड ।। मंगल मंत्री करै विकार । अर्घदीपकै राहु विचार ।।४९।। शालि चने कोदों जौवार । कनक नीरसौं पाकै सार ।। घने मेह जग सारैं परैं । बुध मंत्री एते फल करै ।।१५०।। घने मेघ अरु खेती घनी । रोग सोग भय नहिं मेदिनी ।। फलै वृक्ष सब सुख हुई लोइ । गुरु मंत्रीते इहु फल होइ ।।५१।। दोहा—मेघ घने परजा सुखी, राई बहु खीर ।। गोधन जगमहिं बहु हुवै, जो भृगु होइ वजीर ।।५२।। अग्नि चोर भय परिही, आकुल व्याकुल लोग ।। महाव्याधि दुर्भिक्ष दुख, शनिमंत्री फल होगा ।।५३।।

अथ ग्रहणविचार

दोहा—मावसदिन जो ऋक्ष हुइ, रवि तिस ऋषिमें आइ ।। मावसमहिं परिवा मिलत, तौ रविग्रह निकराइ ।।५४।। चंदाते रवि सातमहिं, मिलै राहु रवि एक ।। पूनममहिं परिवा मिलै, गहन शशी को टेक ।।५५।। रवि शशीको जौ गहन हुइ, मास एकमें होइ ।। कोप शस्त्र क्षय जगतको लरत घने नृप लोइ ।।५६।। ग्रसत उदय अथमै ग्रसत, रवि-शशि करत संहार ।। जे शशि रवि सारो ग्रसत, जगमें

परत दुकाल ।।५७।। गहन होइ रविवारको अन्नलाभ दुर्भिक्ष ।। राज-विग्रह सोमदिन, महिंग तेज रस इक्ष ।।५८।। मंगल अग्नि उछाल बहु, बुधजन करो विचार। रक्त मंजीठ कुसुंभ रंग, बुध महँगो इहु कार ।।५९।।। गुरुदिन गहन लखो इही, दुगुन लाभ चहुँ मास ।। रूपा तेल कपास घिउ, संग्रह करजो तास ।।६०।। भृगुसुतवारैं गहनजू, अन्न घनो संसार ।। सब सुखसौ हुइ मेदिनी, राजऋद्धि विसतार ।।६१।। श्याम वस्तु तिल लोहही; सर्वं अन्न अरु ज्वार ।। लाभ चौगुनो मास इक, गहन होति शनिवार ।।६२।।

अथ भूमिकंपलछनफल

चौपाई–प्रथम याम भूकंपनि होइ। घनी पीर परजाकौं जोइ ।। दूजै याम दिवसकै भाल। जगमहिं परसैं सही दुकाल ।।६३।। तीजै चौथे कंपै इला ।। तौ सुभिक्ष सबही जग भला। दिनके चार याम फल एह। ऋषिवासिष्ठ भाषियो तेह ।।६४।। रात्र प्रथम दूसरैं याम। कंपति धरती जानो आम ।। पूर्व उत्तर राजा दुखी। दोऊ नाश कोऊ नहिं सुखी ।।६५।। तीजै चौथे कंपै धरा। दच्छन पच्छिमको नृप मरा ।। पच्र्छमि दच्छन देश विनाश। रात्र घाम चातुर फल मास ।।६६।।

इति श्रीमेघमालामुनिमेघराजविरचिते ग्रहनक्षत्रादिवर्षालक्षणसमा-चारो नाम द्वितीयोध्यायः ।।२।।

अथ ग्रहवक्रीअतिचारफल

दोहा–मंगल वक्री जात जो, मीनराशि धन जान ।। भय व्याकुल हुइ मेदनी, महँगो घिउ अरु धान ।।१।। मंगल वक्री वक्र ग्रह, जावै तौ दुर्भिक्ष ।। देशभंग भय लोककौं, कहत मेघ सुनि शिक्ष ।।२।। बुध वक्री रस महँग हुइ, अन्न घनो जग होइ ।। गुरु वक्री दुर्भिक्ष जग, महँगो रस कस जोइ ।।३।। मघा बीच गुरु वक्र वै, सुख राजा सुभिक्ष।। पाछै फिर घर आइजौ, तौ महिंगो घृत इक्ष ।।४।। गृह शनि होवै आपनै,

गुरु वक्रै तौ एह ।। लाभ धानते चौगुनो, संग्रह अन्नु करेह ।।५।। वृष तुल कर्क वक्र कै, पाछे भृगु मुरजाइ ।। तौ आनंद परजा सकल, जावै, दुख सुख थाइ ।।६।। जबलग वक्यो हीर है, महिंगो घृत अरु तेल ।। अन्न घनो जग ससति हुइ, ए मुनि भाष्यो मेल ।।७।। छांड़ि भरनि शनि वक्र वै, अश्विनिमांहि सिधारि ।।महिंग होति इकर वरषलौ, चौपदकौ दुखकारि ।।८।। मृगशिरते शनि वक्र कै, जावै रोहणिमांहि ।। खेती जगमें हुइ घनी; रसकस ससतो नांहि ।।९।। शनि वक्री जो मघाते, जाई श्लेषा ऋक्ष ।। कनक शालि घतसहु घटै, बहुजन मांगत भिक्ष ।।१०।। कन्या मीनै वक्र कै, जो शनि जावै राश ।। राजयुद्ध दुर्भिक्ष बहु, जगका करत विनाश ।।११।। चौपाई–उत्तराते शनि वक्री जाइ । पुरवाषाढा-मांहि ढराइ ।।। पच्छिम देश रहै दुर्भिक्ष । आछे लोकोंकौ बहु दुक्ष ।।१२।। दोहा–गुरू संग शनि वक्र कै, अपने घरमों होइ ।। कनक तेल तिल महिङ्ग हुइ, नव मासै लै जोइ ।।१३।। अतीचारजू सौम्य ग्रह, होवैतौ दुर्भिक्ष ।। राजा पावहि दुख घना, कोइ न सुखियो दिक्ष ।।१४।। अतीचार ग्रह क्रूरजू, जावत तो जग सुक्ख ।। सुभिक्ष हुइ धन धानको, कोइ न जगमें दुख ।।१५।। अतीचार शनि जावही, वक्रै गुरु तै जान ।। नवे खंड सुभिक्ष हुइ, राजा भोग भुमान ।।१६।। वक्रै ग्रहजू क्रूरही सौम्य जाइ अतिचार । दुर्भिक्ष विग्रह राजको, अग्नि घनो भयकारि ।।१७।। चौपाई-क्रूर वक्र वै क्रूर सुभाइ । सौम्य वक्रै शुभ जग थाइ ।। अर्घ-दीपकै भाषी वानि मेघमालमहिं मेघ बखानि ।।१८।।

अथ राशिग्रहविचारः

परिहाछन्द–रवि कुज राहु शनिश्चर राशिहि एकमें। तौ पूरवका देश विनासै हुइ इमै ।। मंगल बुध रवि राहु शनिश्चर शशि कह्यो । एक राशि जे होहि तऊ नृप विनसियो ।।१९।। कुज शशि राहु शनिश्चर गुरु एक रासही । राजभंग हुइ देश सबीजु विनासही ।।

भौम गुरु रवि राहु शनिश्चर राश इक । धरनीमहिं हइ मिरत राजको नाश ठिक ।।२०।। दोहा—मंगल भृगु रवि रास इक, महिंगो होवै अन्न ।। तिल अरु घी रप्स अल्प हुइ, विग्रह देशजु मन्न ।।२१।। चौपाई—सिंह रास बुध गुरु जे इंद्र । छत्रभंग अरु मरत नरिंद ।। कष्ट होत जग सकलै मांहि । कही बात सोझूठीनांहि ।।२२।।हा—रवि बुध भुगु इक रासजू, राजभंग उतपात ।। धरनी पावत कष्टकौ, व्यास भनै इहु भात ।।२३।। रवी शुक्र अरु राहु शनि, जे होवहि सम रास ।।२४।। चौपाई—राहु गुरू रवि बुध जो केत । जे होवहि इहु इकसी खेत ।। सरव सुखी नर होवै सही । व्यासऋषीश्वर ऐसै कही ।।२५।। दोहा—भौम शनिश्चर जीव भगु, एक रास जे आइ ।। अन्न महींगो अल्प जल, विनशेगे तरुराइ ।।२६।।

अथ गोलयोग

दोहा—विना शुक्र जे षटग्रही, एक रासमहि आइ ।। गोलयोग इहु आखियै, छत्रै भंग कराइ ।।२७।। चौपद परजा सहु मरत, धरती सब डुल जाइ ।। परत नहीं घन जगतमहिं, हाहाकार पराइ ।।२८।। मंगल शनि वक्रै हुई, जगत पीरसब थाइ ।। अल्प मेह दुख राजको, घनी चलत जग वाइ ।।२९।। चौपाई—मंगल शनि अरु तीजो राहू । एक रासमहिं तीनों थाहू ।। योगकरतिरी ईसका नाम । कतरैं जगकौ ए इस काम ।।३०।। जग निकसै खांडेकी धार । जहँ तहँ होवै मारामार ।। परत न घन उपजत नहिं धान । धरम धान जस करहै हान ।।३१।। इति कर्तरीयोग ।।

अथ वर्षाकुयोग

दोहा—आगल मंगल रथ रहै, पाछे रथ हुइ भानु ।। ऊनमियो योंही रहै तरसैं जलकौ धानु ।।३२।। जबलग पाछे ना मुरत, रवि ते मंगल रास ।। तौलौं परत न बिन्दु घन, मुरैं तौ मेघ विलास ।।३३।।

अथ अर्घकांड । अथ संक्रांतिकांड

दोहा–मेषै संक्रम भानु हो, शशि होवै तुलमांहि दुगुन लाभ चौमासहिं, सब धानहिंते थाइ ।।३४।। वृषै संक्रमहि भान हो, वृश्चिकमें शशि होइ ।। दुगुनि लाभ दुहुँ मासमें, संग्रह धान करोइ ।।३५।।मिथुन राशि रवि संक्रमै, रोहिणि पति धन रास ।। तेल धान तिल संग्रहो, तिगुना लाभ तिक मास ।।३६।। कर्क संक्रमै भानुजू निशपति मकरै होइ ।। विकल रौद्र युधि जानिये, दुर्भिक्ष दारुनि लोइ ।।३७।। भानु सिंह संक्रांतिमें, कुंभ चंद्रमा थाइ ।। दुगन लाभ दुइ मासमहिं धान्य राखु घर ल्याइ ।।३८।। भानू कन्या संक्रमहि, मीन चंद्रमा होइ ।। राइ द्रव्य सहु विनसही, भय दारुनि हुइ लोइ ।।३९।। तुल संक्रांतै रवि वसत, मेष चंद्रमा जान । दुगुन लाभ दुइ मासमहिं, करु सब संग्रह धान ।।४०।। वृश्चिककी संक्रांति रवि, वृषमहिं होइ मृगंक ।। दुगुन लाभ दुइ मास सब, अन्न राखियो रंक ।।४१।। अर्क संक्रमें धन विषै, मियुन विषै शशि आइ ।। पांच मास लाहा दुगुनि, संग्रह धान कराइ ।।४२।। मकर संक्रमहि दिवसपति, निशपति करकै रास ।। धान सबै संग्रह करो, दुगुन लाभ इक मास ।।४३।। कुंभै भानु जु संक्रमहिं शशि आवै सिंहगेह ।। तिल अरु धान कपास गुड़, पंच मास दुगुनेह ।।४४।। मीन बसै संक्रम अरक, शशि कन्यामें इ होइ ।। लाभ दुगुनि चहुँ मास लखु, इकठे धान करोइ ।।४५।।

अथ बृहस्पतिकांड

चौपाई–मसुर चनें जव गेहूं माष । सरसौं मोठ मूंग लै राख ।। कोदों साम कुअसली घीउ । घोरी भैंस महितकौं लीउ ।।४६।। मध्य देश इह संग्रह करो । आठ मास दिन चारस धरो ।। दुगुनि लाभ उपरांते जोइ । मेषराशि सुरगुरु जोइ ।।४७।। पाछमि देश उपद्रव मरी ।। महापीर जगतिसमींह परी ।। मिरच पीपरी अरु हरताल । सेंधा साजि

जाइ फल लाल ।।४८।। वरस एकलौं राखो सही। लाभ होत तिस पाछै कही ।। गोराशिहि गुरु आवै जोइ। ए फल जगमें करता सोइ ।।४९।। गुड़ अरु सकर सुपारी हिंग। गेंहू कपड़ा दाख सुअंग ।। सूत्र षंडु बैदा मन लेर। दस मासहि लौं राखो भेर ।।५०।। मास इकादसमहिं हुइ लाह। दुगुना दमरा जानो साह ।। सर्व धान राखो तिक मास। चौथे मासैं। दुगुन करास ।।५१।। खुरासान कुंकुम दुहकाल। दक्षन देश सूनु हुइ लाल। भंग करै कसमीर सुदेश। मिथुनराशि जो गुरु परवेश ।।५२।। सरव वस्तुका संग्रह करो। कंचनादि तिक मासै धरो ।। चौथे मासहि बेचो सही। लाभ सवायो ग्रंथहि कही ।।५३।। उत्तर भंग करैगो देश। दुख पीरा अरु मरहि नरेश ।। मध्य देश आदिक सहु जान। इनमहिं समाक कंग रु थान ।।५४।। सर्व धान इकठे दुइ मास। चने मसूर कपूर कपास ।। गुरु कस्तूरी मरचा शाल। तीजहि मासहि लाभ विशाल ।।५५।। सरवधान ससता जग जोइ। खुरासान इह महिंग करोइ ।।५६।। सिंहराशिमहिं जो गुरु आइ। एते काज करैगो साइ ।। सरव अन्नका संचय करो। मास पांचमें बेचनि धरो ।। तिगुना लाभ देइ गोसाई ।। कूडी बात कही कछु नाहीं ।।५७।। सरसप तेल कनक अरु चने। खुरासान विनु जगमाहिं घने ।। रोग पीर दुर्भिक्ष कराइ। खुरासान गुरु कन्या जाइ ।। ५८।। मध्य देश संचय करो धान। चौथे मासै बेचो मान ।। विलपथ छत्र होय भंग काल। महा-विरोध परत जंजाल ।।५९।। तेरस परहि छत्रपति होइ। तुलमहिं गुरू करै फल सोइ ।।६०।। रसकस तांबा रूपा तेल। नौ दिन आठ मासलौं मेल।। ऊपर बेचो दुगुना लाह। गुजरातहि महिं विघन कराह ।।६१।। मादू देशै परत दुकाल। जे गुरु मिल है अलकै नाल ।। सुरगुरु कांड कहै यह वात। मेघमालमें दिकहि विख्यात ।।६२।। सुखिया जग सब जोवो सही। जलकरि पूरन होवै मही ।। खेती घनी जगत हुइ मांहि। जो धनके घरमहिं गुरु जांहि ।।६३।। उत्तर विग्रह मध्य सुकाल . पूरव

देशै परत दुकाल ।। तीन मास रख वस्तुसब बेच । नफा करत मकरै गुरु पेच ।।६४।। मध्यदेश पूरव इक वरष । वस्तु राख लाहा आकरष ।। चौपद महिंगो उत्तर वृद्धि । कुंभ गुरु जो देखु मिलिद्धि ।।६५।। कुंकुण उत्तर मादू काल । मास तीन संग्रह करु लाल ।। मध्यदेशमें समा बखान। गुरु आवै जब मीनहि वान ।।६६।। देश तिसीमहिं संचय करो । कह्यो दुकाल औरु तेहरो ।। इसको करियो सम्यक विचार । सुरगुरुकांड कह्या अधिकार ।।६७।।

अथ शनिविचार

चौपाई–जे शनि जावै मेष मकार । तौ गुजरातै करत उजार ।। अन्न महिंग अह दुखियो लोइ । मेघ परत नहिं जाने सोइ ।।६८।। गो शनि आवे तो फल भाल ।। अर्बुद देशैं हुइ दुहकाल ।। नर चउपदका करता नास । मरत नरेशलखो फल तास ।।६९।। मिथुनराशिमहिं जब शनि आइ । पिंगुल देशै नाश कराइ ।। नाश करत जानो मुलतान । सबै वस्तुकी होवै हान ।।७०।। करकराशिमहिं शनिका वास । करता इहु कसमीरै नास ।। दुख पावत तिसमांहि नरेश । परत वारखा होइ कलेश ।।७१।। सिंह शनिश्चरमहिं जो वसै । तौ इन देशनिमहिं फल लसै ।। पूर्वं कच्छव मालव जान । घनो उपद्रव नृपकी हान ।।७२।। शनि वसही कन्याकै गेह । ताका फल तुम जानो एह ।। नव खूंट मारू विललाइ । होइ उपद्रव घन नहिं थाइ ।।७३।। तुल अलिमें शनि आवै सही । ताका फल पंडित इम कही ।। काशीमें वरसै तरवार । अथवा परसी निहचै काल ।।७४।। शनि धनमहिं तौ इह फल जोइ । दिल्ली छत्रहि भँग सो होइ ।। घनो होत दिल्ली संग्राम । भाजड़ परसी ठामो-ठाम ।।७५।। मकर कुंभ शनि आवै जोइ । अन्न घनो सब जगमहिं होइ ।। घरि घरि होत सकल आनंद । कोइ न दीसै दुखियो मंद ।।७६।। मीन शनिश्चर करता वास । सब देशनिका करता नास ।। अथवा घन हुइ

परलो काल । सागरकी जल तौरै पाल ।।७७।। पुर पट्टन दीसै जु जलंत। साधुलोक जग घने क्षयंत ।। नदी नीर जावै तिरवंस। होइ न वरषा परवत ध्वंस ।।७८।। बोयो बीज सबी उड जाइ । चौपदकौ जग भूख-खाइ ।। बारह राशि शनिश्चर फिरै । कहै मेघ जग करक जु लरै ।।७९।।

अथ नक्षत्रशनिकूर्मचक्रविचार

चौपाई–ज्येष्ठा मूला दोइक जान । तीजी पुरवा फालगुनान ।। जे इनमहिं शनि आवे सही । तौ इन देशनिमहि दुख कही ।।८०।। पूरव हस्त पंघारट । देशकामरू अरु रेवातट ।। वने वास नरेंद्रहि जानै । मघप्रस्थै इन देशनि हानै ।।८१।। पूरव दिशमें देशजु एस। इनमाहैं शनि दिष्ट करेह ।। इनको होवै घनो विनास । कहत मेघ इहु शनी विलास ।।८२।। वृद्धिचौपाई–उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा जौ शनि इनमहिं आई । तौ दुख देशनि इनमहिं होवै अग्निकूंणदिशि जाई ।। कुवज कुशलपै डाहल अंगे वंगै देश कलिंगै । राट अजिल्लक अरु उडयानै अरु जयन्दर अग्गै ।।८३।। दोहा–शनि नक्षत्र जु इन वसत इन देशनि तो दीठ ।। नाश करत इनहीतना, और तरफ लिखु पीठ ।।८४।। शतभिष पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपदानि ।। जो इनमहिं शनि आवही, दक्षिणदिशमहिं हानि ।।८५।। सिंहलदद्रूजु भीमरथ मच्छ कह्यो बन-वार ।। तापिमहेश रु किष्किंधा, औ रु लंक मनिधार ।।८६।। कह्यो त्रिकूटै देशही, श्रीपर्वत इकजान । देश ग्यारही दृष्टि इनि, ए दक्षनमहि मान ।।८७।। चौपाई–भरनि अश्विनी रेवति तीन । जे शनि होवै इनमहिं लीन ।। दिष्ट धरत तौ नैरतकून । इन देशनिमहिं करता ऊन ।।८८।। भृगुकछ कुंकुन नाशक जान । घृत मालहि खेटापुरठान ।। महाराष्ट्रे अरु सौठौर । वल्लभ अरु परकासै शौर ।।८९।। देश इही है नैर्ऋत कून । इन देशनकौं करहै सून ।। कही बात सांची इहु भाल । इसकौ जानें सो जग लाल ।।९०।। परिहाछंद–पुषजु आदरा जान

पुनरवसु तीनही । तौ पाछम शनि दीठ नक्षत्र लीनहीं ।। अर्बूद कछ ऐवंती पूरव मालवा । वव्वर दीपहि सिंध सौरठा घालवा ।।९१।। कहि तपेरतहि देश जलस्था जानियो । और परासहि राज त्रिया मन आनियो ।। इन देशनिका नाश शनिश्चर करत है । कहत मेघ तौ जानि दीठ जौ धरत है ।। ९२।। सोरठा—मघा श्लेषा जान, औरु पूर्वाफालगुनि ।। जै शनि मिलि इन आन, वायवकूनै दृष्ट धरि ।।९३।। मारू पेरुहिं शृंग, सरस्वति वेलसमुद्रमहि ।। उच्च जलंधर अंग, अरु गुजरात वरासही ।।९४।। देश करत ए नाश, रविसुतके हैं फल इही ।। अबरु देश सुखभास, कहत बात मुनि मेघ इहि ।।९५।। संकरछंद—लखु हत चित्रा उत्तरा हैं फालगुन जिस नाम। जे शनिश्चर आइ इनपें परत उत्तर ठाम ।। कीर अरु कसमीर मथुरा गाज न कैदार मंडला नैपाल खस है जान ताहि विचार ।।९६।। कह्यो है मलेछ देशहि औरु लखु खुरसान । है हिमाश्रयक ग्यारमों इह उत्तरहि दिश ठान ।। परत इनमें दृष्टि शनिकी खाइ ग्यारौ ठौर । नाश उत्तर दिशि बखानी कहै मेघन और ।।९७।। सवैया तेईसा—स्वाति विशाखा पुनि अनुराधहि आइ वसै रविको सुत जोई । एक पदहि अरु खेत्र अश्वमुख गंगाद्वार लखो जो होई ।। पंचम श्रीकंठ हस्तिनपुरु षट्कून इशान कहै मुनि सोई । दष्टि धरै शनि इनके भीतर खात इनै परु औरु न लोई ।।९८।। चौपाई—मृगशिरा अरु रोहनिमाल । तीजी कृत्तिका शनि इन नाल ।। मध्य देश तौ शनिकी दीठ । इन देशनमहिं परलो पीठ ।।९९।। मध्य देशमहिं नगरी एह । मिथुला चंपाकासी तेह ।। अहिछत्रा कौसंबी गया । और मेषला मध्ये रहिया ।। १००।। जान अयोध्या और प्रयाग । अंतर वेद कनौजु सुभाग ।। इन देशनिका नाश कराइ । औरु देशमहिं सुख शनि थाइ ।।१।। जिस दिशि नगरी शनिकी दीठ । ताकौं लै दातोंसो पीठ ।। स्वयं चक्र परचक्रुजु लरै । काल घनो दिशि तिस शनि करै ।।२।। बात घनी मैं भाषौं कहा। नाश करत शनि देखै जहां ।। अथवा बहुती

वरषा होइ । नीर सहिति विहि है जी सोइ ।।३।। घन अथवा इक बिंदु न परै । राव रंक सब भूखा मरै ।। शनिका फल मैं भाव्या सही । जो फल चक्र कूर्ममहिं कही ।।४।।

अथ फारसीमतात् मुहरमके गुररेका विचार जिस वार होवै तिसीवारका फल

दोहा—मुहरम नामजु मास है, कह्यो फारसी मांहि ।। तामहिं दहेसु होत है, हिंदूकै कछु नाहि ।।५।। चढत चंद जो दह्योको, अगलौ दिन दिशि भार ।। ताका गुररा नाम है, ताका करो विचार ।।६।। तिस गुररे दिन वार जो, ताको फल तुम जोइ ।। अपर मास हीं देखियो, देख मुहर्रम सोइ ।।७।। उत्तम देखी वस्तु यह, मैं भाषी इहि ल्याइ ।। रोस न कोई कीजियौ, गुनि लीजो इस भाइ ।।८।। फल गुररेका वरषमहिं, होवत लखियो मीत ।। मैं फल देख्यो आप झट, गहि लखियो करि प्रीत ।।९।।

अथ रविवारे गुररेका फल

चौपाई—घने मेघ अरु ससते धान । मेवा आछा तर बहु मान ।। पातसाह काम शुभ लाल । लोक सुखी होवहि बहु लाल ।।१०।। चौपद दोपद खतरा नाहिं । दूध दही बहु हुइ घरमाहि ।। घनी जातकी चल है वाइ । तियके कुचमहि बहु दुख थाइ ।।११।। गेहूं होवे आछी घनी । खरबूजा मीठा बहु भनी ।। ताजे होवहिं जग सिकदार । अग्नि जोर बहुते तिलकार ।।१२।। चौपदकी पूरै मुराद । चंदगहन होवै परसाद ।।सीत पछैता होवै सही । थोरी होइ कपासहि मही ।।१३।। काम कहे सब एते जान । देखो पंडित करकै ज्ञान ।। जो गुररा रविवारा होइ । ताके फल तुम लखियो जोइ ।।१४।।

अथ सोमवारे गुररेका फल

चौपाई—अन्नभाव समतामें होइ । पातसाहका काम बिगोइ ।।

न्यामत बहुती जगमहिं थाइ । लोक भले जग घटते जाइ ।।१५।। देश जु पच्छिमहिं हुइ व्याधि । नगर गाम ते अपतरसाधि ।। राह भलै सौदागर नफा । घनी बातसौं तरु सब सफा ।।१६।। दूध कपास रु तिल जग घने । बालक बहुते जन्मन भने ।। रोग घना नर नारी जान ।। अजभैंड हुइ हुत जग मान ।।१७।। बहु तरुकौ लागै फल जोइ । पंछीं चौपद सुखसौं होइ ।। जैसी उतपत तैसा खरच । जो गुरुरा शशिवारा दुवच ।।१८।।

अथ मंगलवारे गुरुरेका फल

चौपाई–जगमहिं होवै बहु दुहकाल । मेह समै सिर परत न लाल ।। नहिं खेती रैयत वीराना । नफा सौदागर बहुतो मान ।।१९।। करी जंग मरिहै जु अमीर राहन चलसी पशुवनि पीर ।। थोरा फल तरु देश उजार । तूटै तरुवर पवनै भार ।।१२०।। गुड़ सक्कर कपासहि खंड । वडे लोक चाकर दै दंड ।। तिल गेहू महिंगे हुइ लोइ । बाप पुत्र-महि दगासु होइ ।।२१।। बरकत किसहूं वस्तुनि होई । अग्निजोर थोरो जग जोई ।। थोरो हुइ नरमहिं पुरुषत । रविको गहि न धरा चालत ।।२२।। टिड्डी मूसा अहि अति घना । करत अनीत जगतमहिं भना ।। फल भाषे सो देखो जोइ ।। मंगलवार तु गुरुरा होइ ।।२३।।

अथ बुधवार गुरुरेका फल

चौपाई–मुंग महिंगा अरु जान कपास। हिंदुभूमिका होवै नास ।। ऊजर जावै नर परदेश । नहिं दरवालै होइ कलेश ।।२४।। मानुष पंछी होवे रोग । पातसाहका काम न होग । जे होवै पतसाही काम । ताको लगसी बहुते धाम ।।२५।। मेह न परसी अपने समै । सौदागरको लाहा कमै ।। जंग बीच मरि है उमराउ । दौलतमंदकों दुख बहु थाउ ।।२६।। चंदगहनि अहि टिड्डी घनी हिंदूभूममें दहसति मनी । चौपद कम अरु महिंगे धान । मेवा दाख जु होवै हान ।।२७।।

चौपदकौ बद्धक बहु होति । अग्नि जोर जगमाहिं करंति ।। खलिबलि परत सारी हिंदधरा ।। बुधवारा गुरुरा जे करा ।।२८।।

अथ गुरुवारे गुरुरेका फल

चौपाई–आछे मेह उपद्रव नाहिं । राजा परजा सुख घरमांहि ।। दरद पराया बूके लोग । पशु पंछी सुखियो सब होग ।।२९।। खेती होवै अरु व्यापारि । स्त्रीके कुचमाहीं दुखकारि ।। बालक रोगी अग्नै जोर । काहू दिशि महिं होइ न सोर ।। १३०।। सीता परत पछेता सही । मेघ लखी सो तैसी कही ।। गुरुवारा गुरुरा फल एह ।कहियो फारसी लिखियो तेह ।।३१।।

अथ शुक्रवारे गुरुरेका फल

चौपाई–नर सबमाहिं विरोध कराइ । खून जंग सबही दिशि थाइ ।। मेह पछेते मेवा मीढ । अग्नि घनी जग करहै दीढ ।।३२।। पवन घनी अरु मध्यम राज । नृपका होसी मध्यम काज ।। महिंगी वसतु सबै जग होइ । नर चौपदकौं सब रुज होइ ।।३३।। नर मध्यम अरु खेती कमी । मध्यम सौदा साहै अमी ।। ससते गेहूं एकहि जान । और अन्नकी कमती मान ।।३४।। जे गुरुरा हुइ भृगुकैवार । तिस वरषहिका भृगु सिकधार ।। नाम कह्यो तिस वरषै दास । भृगुका गुरुका एक लभास ।।३५।।

अथ शनिवारे गुरुरेका फल

चौपाई–लूटे मारग जंग कराई । जंगबीच बहु मारे जाइ ।। रइयति होवै सबी विरान । पातशाह मन शोक जमान ।।३६।। शाल इसीका शनि पतिसाहि । इसमहिं कूट कयो कछु नाहि ।। शनिवारा गुरुरा जे होइ । तिसके फल जानो इहु लोइ ।।३७।। कही फारसी माहिं विचार । ताकी विधि भाषी इहु सार ।। कहत मेघऋषि सुनियो बात । इसका फल जानो विख्यात ।।३८।। रवि शशि मंगल ज्ञ गुरु जान ।

मृग शनि सातैं वार प्रमान ।। सात वार गुरुरा फल कह्या ।। मैं भाष्यो जैसा इहु लह्या ।।३९।। जानवा नहिं अरु रमजान । तीजो कह्यो सुहै शव्वान ।। जिलकाद हिज्जहि सजोइ । कह्यो महरंम सफर विलोइ ।।१४०।। औरु रव्वीलै अव्वल भाल । लखो रवीलहिशानी जलाल ।। जमादलअवल जमादलसाति । रज्जव मास तुरकके जान ।।४१।।

अथ अपराशिस्वामी

दोहा–रविगृह जानो सिंहही, कर्कगेह शशि भाल ।। मेष वृश्चिकै भूमजा, युग कन्या ज्ञ साल ।।४२।। गुरुघर मीन सुकन्या, वृष तुल शुक्रगेह ।। मकर कुंभमहिं शनि वसै, स्वामी राशि जु एह ।।४३।।

अथ ग्रहस्थिति

दोहा–रवितिथि जानो तीस दिन, शशि दिनसवा जु दोइ ।। मंगल पख त्रिक जानियो, बीस दिवस बुध जोइ ।।४४।। तेरा मासै गुरु बसै, मास शुक्र लखु एक ।। तीस महीने शनि रहति, जानो इनकी कटे ।।४५।। मास अठारा वसति है, राहू केतु दुजान ।। कन्यागृह है राशिको राहु केतु इक ठान ।।४६।।

इति श्रीमेघमालामुनिमेघराजविरचिते ग्रहवक्रीअतीचारफलं नाम तृतीयोऽधिकार:समाप्त: ।।३।।

अथ सगुनाध्याय लिख्यते

अथ उत्पातफल

संकरछंद–जो कूप गरजै भूम कंपै फटै धरती कोइ ।। संध्यासमै जो परत तारा करत सारै लोइ ।। धात पाथर हँसत प्रतिमा सबदि हुइ निरघाइ ।। सकल इन्ह फल इही मानो देश नाश कराइ ।।१।।
चौपाई–रुधिर कांकरा वरसत धूर ।। घनी वाइ करती चकचूर ।। विनु बादर विजुली अरु गाज ।। विनु कालहि वरषाको साज ।।२।।

धरनि धरहडै करत विकार ।। चढत केतु जे चोटीदार ।। इनका फल जग काल जु अन्न ।। देश उपद्रव कमती अन्न ।।३।। परिहाछंद–देव यक्ष गंधर्व पुरी आकाशमें । तारा रवि शशि गहन ग्रस्योही आथमें । एह उपद्रव होइ दिवस निशि देखिये । युद्धका दुसरो गहि अन्न न लेखिये ।।४।। दोहा–रातहि इंद्रधनुष्य हुइ, जे दीसत पँचरंग ।। घनो होत उत्पात जग, करत छत्रको भंग ।।५।। काल लवै जो रातको, दिनको बोलै स्याल ।। शून्य मही राजा मरत, परत जगत दुहकाल ।।६।। तीतर घोरा महिष गव, घनो करत निशि वैन ।। नचत भूत गृह रातको, तब जग लहै अचैन ।।७।। जिसी गाममहिं इहु हुवति, ताकौं डरु बहु होइ ।। युद्ध परत सो मारिये, सगुन विचारो सोइ ।।८।। विनु फिराइ चाकी फिरे, निशि सगलीही जान ।। तौ जगमहि उत्पात बहु, मृत्यु जंग बहु मान ।।९।। खावत जात स्वजातकौं, तरुते निकसति धूम ।। आइ मिदग अरभषुरि, करत उपद्रव भूम ।।१०।। चौपाई–मेंडक माथै चोटी होइ । भिड़ै प्रतीमा आपै दोइ ।। तौ जगमहि बहु युद्ध विचार । रोवहि रांड घनी भरतार ।।११।। अकसमात सूकै सर वाइ । घर अरु प्रतिमा लखो कँपाई ।। आमिष वरखा दीसत धान । तो जग डोलत काल करान ।।१२।। दोहा–गो भैंसा बच्छा महिष, घोरीकै खर थाइ ।। गऊ भैंसा वा दो जनति, इह विपरीत कहाइ ।।१३।। फल इसको एही लखो, जगमहि हुइ विपरीत ।। करतनको सनमान किस, घटत जगततें प्रीत ।।१४।। जानमति बालककै हुवै, तीन शीश वा दोइ ।। मात पिता निहचै भखै, राक्षस समृतु होइ ।।१५।। किह तरुको फलु किह तरुहि, लागत अंब अनार।। ऋतु छोड़ी अऋतु फलहि कष्ट जगतसो कार।।१६।। शीत समै अति उष्ण हुइ, उष्ण समै हुइ शीत ।। रोग बधत सब जगत-महिं, इसको फल इहु मीत ।।१७।। शशि रवि दीसत नाचतो, धूमछिद्र वा होइ ।। उदय होति रवि शशि लखो, जगत उपद्रव जोइ ।।१८।। रात उजेरो दिन तिमिर, सलिभ घनी जग आइ ।। परत काल उहि

राज्यमें मुलकहि नाश कराइ ।।१९।। अडिल्ल—नर उत्तम आखज फल खावै। तौ जगमहिं दुहकाल पडावै ।। अकसमात धुनि सुनि जे तनते। तौ उतपात जगतमहिं मनते ।। छंददुवैया—व्यंतर रोवहि बालक लरही शव्द करहि मर मारा। दिसा जुलंती निशिदिन दीसैताकी करो विचारा। काक धानरो संचय करहै लैहूवेमें पावै। तौ दुकाल जो दुख बहुतीया मनुष तरू वध थावै ।।२१।। दोहा—शुक्र चांदने पाखमहिं, उदय अस्त जो होइ ।। तौ जगमें उतपात हुइ, युद्ध घनो जग जोइ ।।२२।। भग गुरु इकठा जौ दिसै, तौ जगमहिं उत्पात ।। अन्न महिंग कुछ होइगो, भावी प्रकटै बात ।।२३।। परिहाछंद—भूत पिशाचहि प्रेत शब्द जिस घरि करै। अथवा सुनियै बोल दरवतौ सब हरै ।। अन सूई गो महिष दूध जे देवही। गाम धनी हुइ कष्ट देश पति लेवही ।।२४।। दोहा—पंछी खैंचे शीश लढ, पकर भूचलौ जोइ ।। तिस नरकौं प्रति कष्ट हुइ एक मास वा दोइ ।।२५।। छंददुवैया—सारस हंसा मोरहि जानो गरुडरूप वा चिरिया। चील्ह वदन इनकै भखु होवे आप आपनै धरिया ।। भक्ष-सहित कोई इक बैठे नरके ऊपर सीसैं। सो नर निहचै राजा होवै बहुत करत बखसीसै ।।२६।। घूघू घूघी किरला विषधर काक परे वा जानो। जिस नरके ए शिरपर बैठत ताका फल मन आनो ।। मरत मासमें सो नर निहचै वा दुख बहुतो पावै ।। ए विधि मूरख लखै न कोई लखै सो पंडित थावै ।।२७।। दोहा—भली खाट पाया तुटै, अकस्मात तौ जान ।। कष्ट लहै तीया घनो, मेघै करी बखान ।।२८।। पिंघूडेपार आल्हणा, करत काक जो वाक ।। करत कष्ट सो घरधनी, अथवा कोऊ साक ।।२९।। चांदनी घरमैं निशि दिसै, तौ घरपति दुख थाइ ।। जिह घर लागै सिंडक बहु, सूनो घरिहुइ जाइ ।३०।। चील्ह परेवा काकही, जिस घर अंडे देइ ।। घरपति तास कुटुंबको, घनो उपद्रव थेइ ।।३१।। मैथुन करतो काक जो, जो देखे नर नारि ।। षष्ठ मासमें दुख लहै, नर नारी सुविचार ।।३२।। सोरठा—नगरसु राखै आन, चील्ह सर्प कालो गही ।। दुख

पावत नृप जान, घरि राखे दुख घरधनी ।।३३।। दोहा—सर्प श्याम मुख चील्ह गहिसि, ज्या राखै आन ।। सौक न आवै तीयको, डक्कै करी बखान ।।३४।। अकस्मातसूं कुसुंभरंग, वसु लागत जो आग। । कष्ट लहै तब तीयसो, श्वेत पुरुष दुख लाग ।।३५।। फटत सिंहासन देहरो, घरको तुटत सतीर ।। अकस्मात जो होत इह, थान पलट हुइ वीर ।।३६।। विनु अवसर जौ ब्याइहै, श्वानादिक सब जीव कहत मेघ दुष्काल, अरु छत्रै भंग करीव ।।३७।। परिहाछंद—उघडत भिड़त कपाट द्वारके देखिये। कडकडाट जो शब्द छात घर देखिये । लगै जु घरम खयाल धनी घर कष्टिये राजा लेवै दंड बात नहिं सुष्टिये ।।३८।। छंददुवैया—गीदर सिंह जु जान चीतरा घरमें बैठे आई । श्वान आन घर गाडै हाडै घर स्वयं शब्द कराई ।। विनु बादर घन होइ अंधेरी आपै घरि ढहि जावै । होइ उजार जो तिस घर भीतर वा तिरिया दुख पावै ।।३९।। गीत वजित्रकी धुनि सुनि है अपने तनते जोई । आपे निकसै शस्त्र म्यानसूं वा असि कडकड होई ।। विनकी ए लच्छन इह होवें पंडित करो विचारा । इसका फल एही तुम जानो युद्ध होत जग भारा। ।४०।। संकरछंद—जो सर्प दीसत दो मुखा वा पूंछ होवे दोइ । जिस इक्षु खित जु नीसरै तौ मरत राजा लोइ । अथवा सुराजा तिय मरत जो सबन यहिं सिकधार । इह कहत कवि ऋषि मेघ ऐसे करो ताहि विचार ।।४१।। सोरठा—नीसर आवै खेत, इक्षु याहि नहिं खोइये ।। राजदंड तिस लेत, अथवा ताकी तिय मरत ।।४२।। दोहा—लाल महिष अरु श्याम बक, दो मुख कूकर होइ ।। काक श्वेत फल इन लखो, नाश देश तिस जोइ ।।४३।। ज्वार बुई हुइ बाजरी, कनकबीजते शाल ।। राजा तो जग दंडि है, अथवा परै दुकाल ।।४४।। चौपाई—वापी कूप रक्त हुइ नीर । काल परत तौ जगमहिं वीर ।। आंख तीन गो बछरे होइ । भय होवत तिस देशहि जोइ ।।४५।। अरहट फेरे विनुजु फिराई । भ्रमत जगत फल इसको थाई ।। घर परिगो महिषी अश्व चढत । तिनका

धनी दु:खमाँहि पड़त ॥४६॥ परिहाछन्द–बादर शंखसमान शब्द जो कारही। करत जगतको नाशदेश उजारही॥ अन्न वस्तु जिस माहैं ल्यावै नागनी बेचो वस्तु शिताब सस्ती बहु गिनी ॥४७॥ चौपाई– सावन घोरी भादौं गाइ। माघमाहिं जो भैंस वियाइ॥ कहत मेघ इसकी सुनि बात। आप मरत कै खसमै खात ॥४८॥

अथ वर्षालंघन

दोहा–रविजु आथमें तिस समै, जे जल बिंदु परंत॥ दिन चौथे वा पंचमै, जलधर बहु बरसंत ॥४९॥ तीतर वरनी बादरी, पच्छमदिस जो होइ॥ बरसै सोलहि पहर जल, जल थल एक करोइ ॥५०॥ जलचर जल ऊपर फिरत, बीलै देख अकास॥ मेघ शिताबी आवसे, करो न को विसवास ॥५१॥ चौपाई–पहर अठारा तापनि करै। पाजै मेघजु बादर धरै॥ तौ उत्तरते आखे सही। घन वरसैगो सारी मही ॥५२॥ रवि चढते जो गाजे किणै। विजुली लसकै करै तिणै॥ तौ आवेगो जलधर जोर। चार याममहिं हुइ घन घोर ॥५३॥ सारो जे दिन तपतो जाइ। संध्याकौ चालै बहु वाइ॥ ताको लच्छन वरसै नहीं। सांची बात बखानी सही ॥५४॥ दोहा–पूरव उत्तर जब लगै, चलत नहीं जा वाइ॥ तौलों मेह न भुवि परत, जानोपंडित राइ ॥५५॥

रवि अथमनिहूकै समै, पच्छम दिशिको जोइ॥ रक्त वरन बादर हुवै, तौ घन समा जु होइ ॥५६॥ पानीमें हुइ बुदबुदा, मच्छर घनोस होइ॥ लवतववीहारतकौ, घन आयो छिन जोइ ॥५७॥ तांबा कांसी लोह रछ, छोडै, मैल जिवार॥ निहचै करिकै जानियो, जलधर वरसति हार ॥५८॥ अंडे ले मुखमें चढत, कीरी ऊरध राहि॥ जानो घन छिन आइयो, कूडी कही सुनांहि ॥५९॥ विडा चीकत छिनछिनै, छाछ तुरस रस देइ॥ तौ घन आवै वेग ही, घरती गरज करेइ ॥६०॥ गागरका जल ऊकलै, माटी अनप घराइ॥ माछी जलहूपर तरै, आयो मेह सुवाइ ॥६१॥ सांप चढत जो रूंखपरि, किरला बदलै रंग॥ कहन

मेघ जो मेघ बहु, होवे जगत अभंग ।।६२।। तीतर बोलत रातको, घनको लच्छन जान ।। वरषा होवै चहुँ दिसै, सांची बात बखान ।।६३।। गोह् रटै भोटै सुरैं, दादुर रटत तलाव ।। अथवा बोलत कूप सर, तौ बरसै घन भाव ।।६४।। उत्तर दिशि मोघा करत, शीतमासमहिं जान ।। नीलै रंग अकाश हुइ, तौ घन आवत मान ।।६५।। सात पुडा बादर करै उत्तर दिशि महिं जोइ ।। उत्तर दिशिकी पवन हुइ, छिनमहिं जलधर होइ ।।६६।। रवि कुंडल दोपहर सम, चारों दिशा गुवार ।। मेघ घनो जगमहिं हुवै, जल थल एक संभार ।।६७।। जो धरती धडहड करत, अधिको उल्कापात ।। तो गिनयां पहरां विषै, घन वरषत शुभ बात ।।६८।। जो शनिवारै बादरा, करत घरी जो एक ।। तौ घन वरसत जगत सब, होवै अन्न अनेक ।।६९।। कालै बादर आथमें, चढतो ऊगे लाल ।। तौ जल इतनो रवि करत, सकै न भुवि संभाल ।।७०।। रवि चढते पच्छम दिशा, बादर मछुली होइ ।। अथवा होवै लहुकिनी, तौ वरषा बहु जोइ ।। ७१।। तीतर बरनी बादरी, चारों दिशिमहिं भाल ।। पहर चार वा आठमहिं वरषा होसी लाल ।।७२।। धुंधलयाली बादरी, चहुँ दिसमाहि हुवंति ।। तौ बरसै चहुँ पहरमहिं थलमहिं नदी वहंति ।।७३।। भगुसुतवारी बादरी, रहति शनिच्चर छाइ ।। तौ इहु सगुन विचार कहु, बिनु बरसे नहिं जाइ ।। ७४।। बसतर पोप सूकनै, अकसमान वलि खाइ ।। पंडित सगुनि विचारियो, तुरतै घन वरसाइ ।।७५।। जंड करीरै चढत अहि, तौ घन बहुतो जान ।। कही बात ऋषि मेघ यहु, सांचो सगुन पिछान ।।७६।।

अथ इंद्रधनुषफल

दोहा–रवि अथमनिहूके समै, पूर्व दिवसमहि देख इंद्रधनुष हुइ पँचरंगा आयो घन छिन वेख ।।७७।। दिनपर ऊंगमकै समै, गजैं धनुष करेह ।। वरसै सोला यामलौं, मेह न होवे छेह ।।७८।। मोघ

करत रवि अत्थमनि, इंद्र धनुष कराइ ।। रक्त रंग आकाशको ततछिन घन वरसाइ ।।७९।।

अथ छिक्कासगुन

चौपाई—मरन करत पूरवकी छींक । अग्निकोन जे शोक जु ठीक । दक्षन छींक करत धन हान ।। नैऋत छींक मिलत पिय आन ।।८०।। पाछम छिक्का गृहमें रहो । वायव छिक्कहि धन बहु लहो ।। उत्तर छींकहि करत कलेस । छींक ईशानी सिद्धि करेस ।।८१।। अधो छींकहि पवन विकार ।। कष्ट करत नर अपनी छींक । प्रतस्याको फल नाहीं ठीक ।।८२।। वस्तु बेचता छींका थाइ । बेचो नहिं नहिं सो महिंगी भाइ ।। चलता छींका छाली होइ । रहै सुघर में जाइ न सोइ।।८३।।

अथ गर्भसगुन

छंदत्रिभंगी—तिय अक्षर जानं तिथि गहि ठानं मेलो भानं करु इकता ।। जो मास गयगभं लीजे लाभं मेलो ए सब एठिकता ।। इहि सप्त हरानं टौक ठरानं बेटा जानं कहु चतुरा । अक्षर सम आवै कन्या थावै मेघ बतावै इहु मितरा ।।८४।।

अथ अंगस्फुरणसगुन

दोहा—अंगस्फुरनि जु होतही, ताको करो विचार ।। पुरुष दाहनो अंग शुभ, भलो वाम अंग नार ।।८५।। दोऊको सम जानिये, फुरे मध्य जो भाग ।। भलो बुरो समही फलै, अपर न कोऊ लाग ।।८६।। शीशैं राजा लाभ पट, भ्रूयुग सुक्ख विचार ।। भ्रूमध्ये प्रिय जन मिलत, वा मित्तर सुखकार ।।८७।। कान शब्द आछे सुनै, काक जान शुभ गंध।। फुरत कपालहि तिय मिलत, उरध होठ दुख फंद ।।८८।। वदन मिष्ट भोजन मिलत, अधरै चुंवन खेल ।। चिबुक फुरत धन मिलत नर, कंठै भूषण मेल ।।८९।। ग्रीवै मृत्युजु जानियो, वात पिरोखै पीठ ।। वंध स्कंधहि आइको, बाहु मिलत को ईठ ।।९०।। पान मध्य धन

सिद्ध हुइ, हिय वांछित हुइ सिद्धि ।। जठर भोग वाहनि कटै, गुहापर वधू विद्धि ।।९१।। लिंग पुत्र अरु मदनसिधि, अंड हर्ष वसु जंघ ।। पाद गमन फल सब कह्यो, कोइ न सकै उलंघ ।।९२।। ऊपरदृग दुख सब हरत, दृगमधि धनकी हान ।। नाक मध्य फुरकत मरत, कहत ग्रंथ मतिवान ।।९३।।

अन्यग्रंथात्

अडिल्ल उरध वाम दृग सुक्ख दुक्ख भय। सुर कहुजु भोग हुइ शान्त्यधय ।। दक्षिन अखि यश लाभ भयंकर। अधौ हानि भय जानु क्षयंकर ।। ९४।। छंददुवैया–भेरि शब्दमिरदंग मर्दुला शंख, बीन धुनि होई। गीत नृत्य जल पूरण कलसा हरिया तिन शुभ जोई ।। रुकमछत्र मनि माटी चामर पाको अन्न दुमतसा । मेघ मिलत इहु अंगदा हनै सगुन भले सब बतसा ।।९५।। छप्पै छंद–पूसर खर धनु श्वन चीह जंबूक मयूरा। उल्लुक कुक्कुट महाभारदा सगुनु सयूरा ।। तीतर काला लवा मेघ वामें अंग होई। करत काज जू सिद्धि प्रवेशहि दाहनि जोई ।। रूपा चिरिया वेद धुनि चैपू मृगक्रीडा रसवी। नवल गरुड इहु दाहनै चलत सगुनु भलकार भुवि ।।९६।। दोहा–गोसुत जोरी सनमुखै, अथवा दाहनि आइ ।। काज होत जातै मिलै, मेघै दियो बताइ ।।९७।। वानर दूजी कोचरी, मुरदा कोई भाल ।। दाहनि लीजे मेघ शुभ, जानोसगुनु सुलाल ।।९८।। भाजन दधि सेती भऱ्यो, सन्मुख ले कोइ आइ ।। मेघ ढील नहिं जानियो, सकल मनोरथ थाइ ।। ।।९९।। अर्धभुजंगीछंद–चट्टए बैल आवै, सजे हत्थ थावै ।। सबौ काज होवै, सगुन मेघ जोवै ।।१००।। दोहा–माला श्वेत जु फूलकी गलै होत नर जास ।। वाकर फूल जु श्वेतही, दाहनि सगुनु विलास ।।१।। सगुनु दाहनै चलत जो, वरत लेहु कर वाम ।। जो वामै चलतै कचे, वरत दाहनी ठाम ।।२।।

अथ रासभवाक

सवैया इकतीसा–वामें अंग जात भलो दाहनै प्रवेश खरो पाछै खर वाक करै जातैं हट आइये ।। आगे जाहि बोल करै ताहि प्राण चोर हरै मैथुन करत राह बीच सिद्धि पाइये ।। लिंगको उलार दोर बामें कर करे शोर काजहूकी सिद्धि औरबहू सुख दाइये ।। रासभको वाक एह जानियो सगुन तेह कियो है बखान मेघ संस्कृतैं गाइये ।।३।।

अथ काकभाषासगुन प्रथम पहर फल

चौपाई–पूरब पहिल पहर सुनि काक ।। धनपरापती तिसकैं वाक ।। दूज तीजे सुत अग्नी भय ।। चौथे पहर होय धनकोदय ।।४।।

अथ अग्निकोणफल

चौपाई–अग्नि याम पहले फल एह ।। वैरी मिलसी जानो तेह ।। दूजे लछमी तीजे कल है ।। वात विदेसै चौथे लहै ।।५।।

अथ दक्षिणफल

चौपाई–प्रथम प्रहरजू दक्षिन दिसै ।। वांछित मित्रहि दूजे लसै ।। तीजे विद्या पावै सही ।। चौथे सुखकी बातसु कही ।।६।।

अथ नैर्ऋतफल

चौपाई–नैर्ऋतकोन आहि मग होइ । दूजे याम चोर भय जोइ ।। तीजे रोग तना भय जानि ।। चौथे मरण कह्यो सुनि वानि ।।७।।

अथ पश्चिमफल

चौपाई–पाछम पहले वरषा भाल ।। घन दूजे यामै बहु लाल ।। तीजे कलह चतुरमें चिंता ।। पच्छिम चोर याम मसमिता ।।८।।

अथ वायव्यफल

चौपाई–वायव पहले धन अरु काज ।। मित्तर लाभ दूसरे राज ।। तीजे धनका लाभ कराइ ।। चौथे पित्र विछोरा थाइ ।।९।।

अथ उत्तरफल

चौपाई–उत्तर प्रथम याम भय देइ ।। दूजे लाभ तिया सुख थेइ ।। तीजे सुखी चतुर्सुख नास ।। पहर कहे चारोंमें भास ।।१०।।

अथ ईशानकोणफल

चौपाई–पहले वात दूरकी सुनै ।। दूजे मारग विषमसु भने ।। तीजै खुशी होत नर नार ।। चौथे चिंइ इशानै धार ।।११।।

अथ जंबूवाकफल

चौपाई–पहर प्रथम पुघै महिलाह ।। दूजे रोग घनो तन थाह ।। तीजे वान सुनै शुभ नमी ।। चौथे राजा मिलसौ अमी ।।१२।।

अथ अग्निकोणफल

दोहा–अगनि अग्नि भय भय पहिले याम । घने दिवस हुई दूजे काम ।। तीजे घोरा चौपद आइ ।। चौथे असिका भय थाइ उपजाइ ।१३।।

अथ दक्षिणफल

चौपाई–प्रथम याम लक्षन धन पाइ ।। दूजे धन तीजे भय थाइ ।।
चौथे होवै धनकी हान ।। चार याम दच्छन फल जान ।।१४।।

नैर्ऋतके लच्छन

चौपाई–नैर्ऋत परथम काज सरै। दूजे लाभ सुधनका करै ।।
तीजे राजाके सन्मान ।। चौथे काम भोग सुख ठान ।।१५।।

अथ पश्चिमफल

चौपाई–गाम चलावै पहिले जान ।। दूजे चोर तना भय साम ।।
तीजे धनु चौथे मन खुसी ।। पच्छिम चार थाम फल हुसी ।।१६।।

अथ वायव्यकोणफल

चौपाई–कारज विनसै पहिलेयाम ।। दूजे अग्नि तना भय ढाम ।।
तीजे दुख चौथे जु कलेस ।। वायव्य फलमें भाषे ऐस ।।१७।।

अथ उत्तरफल

चौपाई–प्रथम रोग हुइ पुत्र पीर ।। तीजेमें दुख भूखैं वीर ।।
चौथे गाम गऊ घर आइ ।। उत्तरयाम चतुर फल थाइ ।।१८।।

अथ ईशानकोणफल

चौपाई–पहिले याम धन लाभ कराइ ।। दूजे अग्नि तनो भय भाइ ।। तीने राजाका भय होइ ।। चौथे ठाकुर मिलसी कोइ ।।१९।।

चार पहर ए कहे इशान ।। आठों दिस फल कियो बखान ।। दिवस याम चारों फल कहै ।। वायस जंबुक दोनों लहै ।।१२०।। दिस दिसमहिं लखु चार जु याम । जंबुक काकै फल अभिराम ।। कही डक्कने सांची बान ।। कहत मेघमें इसमहिं आन ।।२१।।

अथ शिवावाक दिनप्रथमयामफल

परिहाछंद–पूरव पहले याम शिवा जो बोल है ।। मरन दिवसमहिं एक कोई नर सो लहै ।। आनैं नर किह खाइ दिवस ज्योतीनमें ।। दच्छनगामें व्याधि चोर बीलीनमें ।।२२।। नैर्ऋतगामें गुल्फ दिवस जो चोरमें ।। पच्छममें हुइ कूठ दिवस पचकारमें ।। वायव मित्र मिलै उत्तरै धन मिलै ।। ईशानै धन आइ दिवस तोही मिलै ।।२३।।

अथ द्वितीयप्रहरफल

परिहाछंद–दूजे बोले पहर पूरवै सुख करै ।। अग्नै अग्नि जु दाह दूसरे दिन धरै ।। दच्छनमें पशु होइ तीन दिन जानिये ।। नैर्ऋत चोरी होइ दिवस चौ मानिये ।।२४।। पच्छम धन दिन पांच वायवै तप चढै ।। उत्तर बोले त्रास दिवस बीसै पढै ।। ईशाने सुह काल दिवस सो आठही ।। अथवा वरषा होइ नहीं सो साठही ।।२५।।

अथ तीसरे यामका फल

परिहाछंद–पूरव पहिल याम नगरमें शठदिनै ।। अगनिकूनमें सुक्ख शिवा बोले तिनै ।। दिच्छनमें दिन तीन मांहि पुर होइ है ।। नैर्ऋत मीठा अन्न मित्र मिल कोइ है ।।२६।। पच्छम सुख वायव्य किसी नहिं त्तितही ।। उत्तरमें सुख जानि ईशानै शांतही ।। तीजो पहर विचार कह्यो फल एसही ।। आगे चौथो याम मेघ सुनि इम कही ।।२७।।

अथ चौथे यामका फल

परिहाछंद–भोजन मीठा मिलै पूरवै दिन इकै ।। अग्नै सुक्ख पिछान शिवा जो दिन बकै ।। दच्छन भय हुइ चोर नैर्ऋतै धन लभै ।। पच्छम मिलि है मीत वायवै धन समै ।।२८।। उत्तरमें दीख वर दिवस सुनि सातमें ।। सोई फल ईशान जानियो आतमें ।। चार यामकी बात कही सुनि लीजियो ।। दिनका एह विचार भुपंडित कीजियो ।।२९।।

अथ रात्रिप्रथमयामफल

दोहा–निशा प्रथम पहले पहर, पूरव शिवा जु वाक ।। तीन दिवस-महिं भय करै, गाम जानु तिस थाक ।।१३०।। छंदुदवइया–कून अग्नि दो मासमैं दुख दच्छन मरइ ।। पच्छममें प्रथानको ए नर पांचदिवस महिं जानो ।। वायव उदू षट दिनमहिं नगरी आछी विधि करि मानो ।। ।।३१।। दोहा–उत्तरमें मृग चोर भय, दिवस पांचमहिं होइ ।। ईशानै सबकी सुखी, आठ दिवसमहिं जोइ ।।३२।।

अथ रात्रिद्वितीययामफल

दोहा–पूरव दिन भय एकमहिं, अगिनै अग्नि जु दाह ।। दच्छन भय हुइ चौरको, नैर्ऋत वहु युध थाह ।।३३।। पच्छम भय दिन सातमें, वायव मीत मिलाप ।। उत्तर भय दिन सातमहिं, गयो इशानै पाप ।।३४।।

अथ रात्रितृतीययामफल

दोहा–पूरव अग्नि जु मृत्यु हुइ, तीन दिवसमहिं जान ।। अग्नै अग्नि जु दाह हुइ, दो दिनकै परमान ।।३५।। दच्छन भय पुर तीन दिन, नैर्ऋत सिद्धहि काज ।। पच्छम घन दिन पांचमहि, निहचै होसी राज

।।३६।। वायव गति धन आइ है, उत्तरमँहि कल्यान ।। ईशानै सुखको करै, डक्कर वचन परमान ।।३७।।

अथ रात्रिचौथायामफल

दोहा—पूरव मनवांछित करै, अग्नै अग्नि जु दाह ।। दच्छन मरन करै सही, नैर्ऋत भोग कराहि ।।३८।। सुरभिख पच्छम जानियो, वायव्य-में बहु गाम ।। उत्तर वात चलै सुणै, ईशाने भय ठाम ।।३९।। परिहाछंद—पहर चार दिन जान रातके चारही ।। भाखे गिदरी वाक सुलेहु विचारही । जिस बलदन कराइ बोल है सो शिवा ।। तिसी तरफ फल थाइ सगुन सुनु दिस दिवा ।।४०।।

अथ किरलीसगुन

चौपाई—एकम दुख दुजराई मान । तीज लाभ कलही चौथान ।। पंचम छठ सत्त जो परै । तिस मनसकौ विघनसु करै ।। ४१।। आठम नौमी दसमी परै । भली लाभदायक सो भिरै ।। ग्यारस पुत्र द्वादशि धनी, तेरस धन चौदे मति हनि ।।४२।। पनरस भय मावस धन नास, षोडश तिथिका फल इहु भास ।। सगुनु विचारी पंडित कहै । भलो बुरौ जाको सब लहै ।।४३।।

अथ सातवारफल

दोहा—रवि दिन अति मंदी कही, शनी शुक्र कुज रोग ।। शशि गुरु बुध वारै परै, तौ होवै, बहु भोग ।।४४।।

अथ नक्षत्रफल

दोहा—अश्विनी शुभ भरनी बुरी, कृतिका धनकी हानि ।। रोहिणी मृगशिर धन करैं आर्द्रा मरति कहानि ।।४५।। पुनरवसै पुष धन करै, मघा श्लेषै सुक्ख ।। परवा फालगुनी रुजी राम गमावै दुक्ख ।।४६।।

अडिल्लछन्द–उत्तरा गुनि स्वाति विशाष । धनका नाश कर मुनि भाव ।। चित्रा हस्ति जो लाभ कराई । अनुराधामें शुभै कहाई ।।४७।। ज्येष्ठा मूल पूरवाषाढ़ा । उत्तराषाढा मरनसू गाढ़ा ।। श्रवण नक्षत्र भली बखानी । राज धनिष्ठा कहै मुनि वानी ।।४८।। चौपाई–शतिभिष पुरवाभाद्रपदाइ ।। उत्तरा भाद्रै भाग्य बधाइ ।। होइ रेवती माहि जो रोग ।। ए भाखियो नक्षत्र योग ।।४९।।

अथांगफल

दोहा–श्रीवंतै माथै परत, धनका करैस नाश ।। दारिद्री माथै परै, करै भाग परकाश ।।१५०।। चौपाई–कंठ परेते गहना पाई ।। भौंहामधि तौ मित्र मिलाइ ।। नाक परेते लहै सुगंध ।। मुखपर मीठा भोजन बंध ।।५१।। दोहा–दोनों बाहै जो परै धनकौ तुरत हरेइ ।।५२।। गलै परैते सुख करै, वाम भुजामें देइ ।। कंध परे तो जय कही, दक्षन भुज धन थेइ ।।५३।। कुचपरि परै सुभाग हुइ, हियमा है सुख देइ ।। कुक्ष परै पुत्रहि लहै, नामहि सोभ करेइ ।।५४।। जानू मारग चालिये, साथ लबसन जू थाइ ।। पींडी मरना जानिये, पगपर हान कराइ।।५५।। अंगुठ परै तौ शोक हुइ, अथवा भय हुइ चोर ।। स्त्रीका वामा अंग शुभ, पुरुष दाहनो जोर ।।५६।। चौपाई–मेंघै विचार मेघ ऋषि कही । जैसी गुरुके मुखते लही ।। मनकी उकति न भाषी कोई । जो ग्रंथनिमहिं भाषी सोई ।।५७।। समझ करै इसका जु विचार । ताकी होइ न कबहूं हार ।। मेघमालमहिं मेघ विचार । काल दुकालहि सगुनै धार।।५८।। ज्योतिष औरु बात है घनी । सो मैं ईहा वाही गिनी ।। सुगम बात मैं

राखी यह । करत अनंद सकल सुख देत ।।५९।। मूरखके कर दे नाहिं।बो सोइ इस मरम न पावै काहि ।। चतुर विचारी साधै काज । मेघ कहै समुझो कविराज ।।१६०।। दृढपटाछंद ।। श्रीजठममल्लि मुनीशजी सब साधनिराजा ।। परमानंद सुसीस है ग्रंथनि गन साजा ।। शिष्य भयो सदानंद तिसीते उपमा भारी ।। चौदा विद्या युक्ति सोई आज्ञा गुरुकारी ।।६१।। चौपाई—ताहि शिष्य नारायण नाम ।। गुनि सोभाकी दोष ठाम ।। ताको शिषा भयो नरोत्तम ।। विनयवंत अज्ञान भग्योत्तम ।।६२।। तासे वामहिं मथाजुराम कृपावंत विद्या अभिराम ।। तिनकी दया भई मुझ ऊपर। उपज्यो ज्ञान सही मुझही उर ।।६३।। अडिल्ल—ताते मेघमाल इहु कीनी । जो गुरुके मुखके मुखते सुनि लीनी ।। इसको पढेसे शोभा पावै । सो जगमें पंडित कहलावै । रसावलछंद—मुनि शशि वसुको जानमही संवत हुइ आखति ।। कातिक सुदि गुरुवार मान पंचम तिथि भाषति ।। उतराषाढ नक्षत्र दिवसमहिं ए कवि कीजत ।। जो घटि अक्षर होइ ताहि कवि सुधि करि लीजत ।।६४।। लीलावतीछंद—देश जलंधर शोभै सुंदर नाम दुआबा ठौर मह्यो ।। शुभ दान पुण्यकी ठौर इही है मानो सुरपुर आन रह्यो ।। पंडित नर शोभै कवि मह लोभै गीत बजितररंग रसियो ।। गृह गृह मंगलचार जु होवहि तामहिं पुर इक इह बसियो ।।६५।। दोहा—सकल ऋद्धि कर शोभ है, फगुवारा शुभ थान ।। तहां मेघ कविता करी, आछी विधि मन आन ।।६६।। चूहउमल्लिजु चौधरी, फगुवारेको राइ ।। चतुर सैन्य करि शोभ है, जिम उडुगण शशि थाइ ।।६७।। सब कवियनसों वीनती, करत मेघ कर जोर ।। करो शुद्ध इस ग्रंथको, अधिक कह्यो जिहि ठोर ।।६८।। बाल

कहत जो बातको, पंडित करत विचार ।। कह्यो अशुद्धहि होइ कछु, लीज्यो कवित सुधार ।।१६९।।

इति श्रीमेघमालामुनिमेघराजऋषिविरचिते शकुनविचारो नाम चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ।।४।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
६६/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.